शिक्षा का उत्थान

शिक्षक का सम्मान

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-१
अंक-२

माह-अगस्त २०१८

मिशन शिक्षण संवाद

आओ हाथ से हाथ मिलाएं। बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं।।

शिक्षा का उत्थान

शिक्षक का सम्मान

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-१
अंक-२

माह-अगस्त २०१८

प्रधान सम्पादक

श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ. सर्वेष्ट मिश्र

सुश्री ज्योति कुमारी

सम्पादक

प्रांजल सक्सेना

आनन्द मिश्र

सह सम्पादक

डॉ0 अनीता मुद्गल

आशीष शुक्ल

छायांकन

वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन

आनन्द मिश्र

विशेष सहयोगी

शिवम सिंह, दीपनारायण मिश्र

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
पाठकों के पत्र	6–7
विचारशक्ति	8–9
मऊ ICT कार्यशाला	10–14
मिशन गीत	15
बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्न	16–34
निन्दक नियरे राखिए	35–36
टी.एल.एम.संसार	37–38
अंग्रेजी शिक्षण की समस्याएं एवं समाधान	39
शिक्षण गतिविधि	40
नवाचार	41
सद्विचार	42
बाल फिल्म	43
बच्चों का कोना	44–45
शीर्षासन	46
माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट	47
माह का मिशन	48
कस्तूरबा विशेष	49–50
महिला अध्यापकों की चुनौतियां	51
सामान्य ज्ञान	52
शिक्षण तकनीकी	53
महत्वपूर्ण दिवस	54
वाराणसी कार्यशाला	55–56

शुभकामना संदेश

बेसिक शिक्षा विभाग का एक स्वर्णिम काल रहा है। एक समय के गुरुओं ने गाँव-देहात के बच्चों को इतनी अच्छी शिक्षा दी कि विद्यार्थी आईएएस, प्रोफेसर से लेकर उच्च राजनेता तक बने। बीच में एक शिथिलता का माहौल बना जिससे शिक्षकों की छवि को बड़ा नुकसान पहुँचा। लेकिन विगत कुछ वर्षों से लाख परेशानियों के बाद भी शिक्षकों में जोश की एक नयी लहर पैदा हो गयी है। मिशन शिक्षण संवाद ने इस लहर को विस्तारित करने में अहम भूमिका निभायी है। मिशन शिक्षण संवाद ने एक ऐसी स्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा को जन्म दिया है जहाँ शिक्षक एक-दूसरे से बेहतर शैक्षिक वातावरण का निर्माण करने और उत्तम शैक्षणिक परिणाम देने को प्रयासरत हैं।

इसी बीच मुझे जानकारी मिली है कि जुलाई माह से मिशन शिक्षण संवाद की मासिक शैक्षिक पत्रिका भी प्रकाशित हो रही है। मैंने इस पत्रिका को देखा तो पाया कि इसमें अत्यंत ही रोचक व शिक्षकोपयोगी स्तम्भ हैं। मैं इस पत्रिका के सतत और सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

दिनांक:-28/07/2018

Prakash Narayana Srivastava

वरिष्ठ प्रवक्ता
P.E.S.
डायट, इलाहाबाद

सम्पादकीय

विमल कुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात

बेसिक शिक्षा के उत्थान और शिक्षक के सम्मान के लिए सदैव तत्पर रहने वाले मिशन शिक्षण संवाद के सभी आदरणीय सहयोगियों को मिशन शिक्षण संवाद परिवार की ओर से सादर नमन।

जैसा कि आप सभी को अवगत है कि मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद जुलाई–2018 से आप सभी के पास www.missionshikshansamvad.com के माध्यम से पहुँच रही है। जिसे आप सभी ने आशा से अधिक सहयोग प्रदान कर मिशन शिक्षण संवाद परिवार को शिक्षा के उत्थान के लिए और बेहतर करने की प्रेरणा दी है। जिससे मिशन शिक्षण संवाद की पूरी टीम आपका आभार प्रकट करती है।

साथ ही आशा करते है कि शिक्षण संवाद अगस्त–2018 के अंक को पढ़कर, आप अपना सहयोग, सुझाव और भविष्य के लिए मार्गदर्शन, मिशन शिक्षण संवाद की टीम को अवश्य प्रदान करेंगे। जिससे शिक्षा के उत्थान और शिक्षक के सम्मान के लिए सकारात्मक ऊर्जा के साथ भविष्य की दिशा तय करने की प्रेरणा मिलती रहेगी।

बहुत–बहुत धन्यवाद!

पाठकों के पत्र

सर्वप्रथम शिक्षण संवाद पत्रिका के प्रधान संपादक आदरणीय श्री विमल कुमार जी और उनकी पूरी टीम तथा सहयोगियों को शिक्षण संवाद पत्रिका के प्रथम संस्करण के सफल प्रकाशन हेतु अनन्त शुभकामनाएँ।

बेसिक शिक्षा के उत्थान और शिक्षकों के सम्मान के लिए दिन रात कठिन परिश्रम करके मिशन शिक्षण संवाद को पूरे प्रदेश में प्रसारित करने वाले तथा हम सभी शिक्षकों के लिए अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करने वाले मिशन शिक्षण संवाद के समस्त कर्मयोगियों तथा अनमोल रत्नों को बहुत बहुत शुभकामनाएं।।

पूरा बेसिक परिवार मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका 'शिक्षण संवाद ' के प्रकाशन से स्वयं को अत्यंत गौरवान्वित महसूस कर रहा है।।

बेसिक शिक्षा को एक नई पहचान दिलाने और बेसिक शिक्षा के प्रति समाज में व्याप्त भ्रान्तियों को दूर करने में तथा शिक्षा के उत्थान और शिक्षक के सम्मान में शिक्षण संवाद पत्रिका निश्चित रूप से मील का पत्थर पत्थर साबित होगी।

डॉ. सर्वेष्ट मिश्र द्वारा विचार शक्ति में प्रस्तुत–– 'बुनियादी शिक्षा–व्यवस्था में गुणवत्ता का वाहक बन रहा 'मिशन शिक्षण संवाद' निश्चित ही मिशन शिक्षण संवाद की गौरव गाथा है।

मिशन शिक्षण संवाद के चार कार्य चार ''प'' हैं– –अर्थात् परिवेश, पढ़ाई, प्रचार और पॉवर।

डॉ खुर्शीद हसन जी द्वारा रचित मिशन गीत– –आओ हाथ से हाथ मिलायें अत्यंत प्रेरणादायक है।

इस पत्रिका में हम सभी शिक्षकों के लिए अनुकरणीय अनमोल रत्नों और उनके बेसिक शिक्षा के उत्थान हेतु किये गये सराहनीय प्रयासों की प्रस्तुति शानदार है।

श्री महेन्द्र सिंह यादव जी द्वारा प्रस्तुत आलेख निन्दक नियरे राखिए बेसिक शिक्षा का आईना है।।

टी एल एम संसार ,शिक्षण गतिविधि, नवाचार, प्रेरक प्रसंग,सद्विचार, बच्चों का कोना मन को मोहित करनेवाले हैं।

श्री प्रांजल सक्सेना द्वारा लिखित–''शीर्षासन ''मास्टर भोलाराम आज–कल के सच्चे भोलाराम की काफी मजेदार कहानी है।

''खण्ड शिक्षा अधिकारी ने गहने बेचकर भीख मांगते बच्चों को पढ़ाया'' दिल को छू लेने वाली पोस्ट है। नमन् है ऐसे अधिकारी को

बात शिक्षिकाओं की में बहन प्रियंका गुप्ता द्वारा प्रस्तुत–कोमल है कमजोर नहीं तू पढ़कर बहुत अच्छा लगा।।

और अंत में गागर में सागर भरने वाली शिक्षण संवाद पत्रिका के प्रधान संपादक आदरणीय श्री विमल कुमार जी और उनकी पूरी टीम तथा सहयोगियों को पुनः कोटिशः बधाई और शुभकामनाएँ।।

धन्यवाद

ओमकार पाण्डेय
सहायक अध्यापक
उच्च प्राथमिक विद्यालय किरतापुर
विकास क्षेत्र सकरन
जनपद सीतापुर।

पाठकों के पत्र

धन्यवाद सर जी।

मैने पत्रिका डाउनलोड करके देख ली है। आपके संकलनकर्ताओं ने तो इसमें गागर में सागर भर दिया है। भोलाराम जी की कहानी बहुत अच्छी लगी। कविताएँ भी अच्छी लगी। पर अभी पूरी नहीं देख पायी हूँ। एक नजर में तो पूरी बुक अच्छी लगी। पर क्षमा कीजियेगा आप बुरा न मानें तो मुझे उसका कवर पत्रिका से मेल खाता नहीं लगा या शायद मोबाईल में साफ कलर न आया हो। प्रिंट निकलवा कर देखेंगे।

क्षमा कीजियेगा सर। धन्यवाद।

जमीला खातून, झाँसी

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका अपने आप मे, गागर में सागर है। यह पत्रिका शिक्षकों के पाठ योजनाओं के लिए अत्यन्त कारगर साबित हो रही हैं। जुलाई माह के संस्करण में सामान्य ज्ञान की जानकारी अत्यन्त सराहनीय है ,जब से इस पत्रिका का अनुसरण हम कर रहे हैं, तब से शिक्षण कार्य में दोगुनी उर्जा से पठन पाठन का कार्य हो रहा हैं। हम इस पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

अनिल कुमार मौर्य, स0अ0
प्राथमिक विद्यालय मदनपट्टी,
कोयलसा, आजमगढ़

विचारशक्ति

"एक नन्हा सा दीप, न जाने कितने निगल गया अँधियारे।
जाने कितनी बार तिमिर ने, सर पटका है आकर द्वारे।।"

एक नन्हा सा दीप जलाकर कितना अन्धेरा हम दूर कर देते हैं। सबको मालूम है, फिर हम तो अध्यापक हैं जिसकी तुलना की जाती है उस दीपक से जो स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाशित करता है। पर क्या हम सब जल रहे हैं? नया वर्ष, नया सत्र आ ही गया, कितनी समस्यायें, कठिनाईयाँ हैं आस–पास कुछ करने लगो तो कितनी नकारात्मकता है चारों ओर, जिसको देखकर लगता है मन को कि जैसा चल रहा है वैसा ही चलेगा। अपनी क्षमताओं पर या तो हम भरोसा ही नहीं करते या उन्हें महत्व ही नहीं देते। करते है ना हम ऐसा? "मेरे कहने से आप 10 अध्यापकों से बात कीजिए, जो भी मुझे व्यक्तिगत रूप से जानता है उसे मालूम हैं कि मैं पीछे रहकर ही काम करने वाली रही हूँ आज मैं अगर स्वयं को प्रस्तुत कर पायी हूँ तो सिर्फ इस कारण क्योंकि मैंने किन्ही भी नकारात्मक परिस्थितियों से समझौता नहीं किया, मैं आँसुओं में डूबी नहीं, हार नहीं मानी, क्योंकि कक्षा 10 में मेरे अध्यापकों नें मुझे यही सिखाया था कि किसी को दुःख न पहुँचाना, किसी का अहित मत करना, हार मत मानना।

ये सब बातें कहना, इसलिए जरूरी है क्योंकि मैं कर रही हूँ, जबकि मेरे जीवन की प्राथमिकतायें ये नहीं है कि मुझे सब पहचानें या प्रशंसा करते रहे।

प्रिय साथियों हमारे अनमोल रत्नों में से कुछ तो अभी कुछ ही वर्ष से अध्यापक बने हैं, उन्हें तो ऊँचाई तक पहुँचना है, तो सबसे पहले मन में एक दीपक जलाकर स्वयं से वादा करो कि इसे बुझने नहीं देंगे हम, अब सिर्फ विद्यालय के बच्चों को देखकर संकल्प लो कि ये हमारे ही बच्चे हैं।

आओ उन्हें सिखाएँः–

1. जीवन में हर परिस्थिति का सामना करें और आगे बढ़ें।
2. समय का सदुपयोग करें।
3. वो पेड़ बनें जो छाया दे, फल दे, फूल दे।
4. सूरज बन रोशनी दें।
5. चन्द्रमा बन शीतलता दें।

इस प्रकार चाहे वो जो भी बन जाएँ। धुन के पक्के रहेंगे, न डरेंगे और न ही रुकेंगे।

आइए सत्र समाप्त होने पर हम कह सकें कि हमने बच्चों को जो भी सिखाया पढ़ाया वो सब उन्होंने अपने जीवन में आत्मसात किया। तो आप दीपक की भाँति जलने के लिए तैयार हो जाएँ, हम क्या योगदान दे सकते हैं स्कूल चलो अभियान में ज्यादा से ज्यादा बच्चों को विद्यालयों में लाने में ये सोचें। फिर संकल्प लें कि हमें वर्ष के अन्त मे 5 कहानियाँ अपनी पुस्तक में लिखनी हैं।

1.उस बच्चे की जिसको हमने यहाँ से वहाँ तक पहुँचाया।

2.उस बच्चे कि जिसके जीवन में इतनी परेशानियाँ थीं मेरे कारण एक भी नहीं हैं।

3.उस बच्चे की जो ये भी नहीं जानता कि दूसरों से कैसे बोलना है। जीवनशैली में शांति पैदा कर खुश कैसे रहना है पर मेरे कारण वो रोना तो भूल ही गया।

4.उस बच्चे की ईश्वर ने जिससे उसके माँ बाप छीन लिये, तो क्या हुआ ''मैं हूँ ना'' माँ बाप का स्थान नहीं ले सकता पर एक अच्छा अध्यापक बनकर उसे सब कुछ दूँगा।

5.फिर उन सभी कक्षा के बच्चों की कहानी जो जीवन यात्रा में बहुत बड़े–बड़े पद पर न भी पहुँचे पर जिन्दगी को खुशनुमा बनाकर चहचहाना सीखे।

अब बारी आपकी है आप सब अपने सुझाव दें। अपने संकल्पों से परिचय करवायें ताकि हम सब एक योजना तैयार कर सकें कि हम ये सब करने वाले हैं।

है अन्धेरा बहुत, रोशनी चाहिये।
निमन्त्रण चलो उजालों को देने चले।
जिनके आँगन अमावस्या का तम है घना।
उसके आंगन मे ज्ञान दीप रखने चलें।

चलो चलें हम
स्कूल चलें हम

नीलू चोपड़ा
स. अ.
उच्च प्राथमिक विद्यालय, मल्हीपुर,
जनपद सहारनपुर

परिषदीय विद्यालयों में सूचना संचार तकनीक (आईसीटी) के प्रयोग से उजियारा बिखेर रहे नवाचारी शिक्षक

डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र
संपादक–प्रधानाध्यापक
आदर्श प्राथमिक विद्यालय मूड़घाट, बस्ती

निजी आईसीटी संसाधनों की व्यवस्था व उसका प्रयोग कर उत्तर प्रदेश के बेसिक शिक्षा परिषद के सैकड़ों अध्यापक कावेंट स्कूलों को दे रहे हैं कड़ी टक्कर, निखार रहे बच्चों का भविष्य

बेसिक शिक्षा महोत्सव मऊ में आईसीटी प्रयोगकर्ता विभिन्न जनपदों के सैकड़ो शिक्षकों ने अपने आईसीटी कार्यो का किया पॉवर पॉइंट प्रस्तुतीकरण

बेसिक शिक्षा निदेशक डॉ0 सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह, एससीईआरटी के संयुक्त निदेशक श्री अजय सिंह सहित विभिन्न अधिकारियों ने किया शिक्षको का उत्साहवर्धन व सम्मान

मऊ। बेसिक शिक्षा परिषद के जिन स्कूलो के बारे में लोग कमियाँ गिनाते नही थकते थे। अब उन्हीं बेसिक शिक्षकों के प्रयासों से स्कूलों में बदलाव की बयार बह चली है जिसके कारण स्कूल हाईटेक हो चले हैं और वही समाज आज ऐसे परिषदीय शिक्षकों व स्कूलों की खुले मंच से प्रशंसा एवं सम्मान देने का काम कर रहा है। बेसिक शिक्षा में जहाँ कुछ लोग अक्सर संसाधनों की कमी का रोना रोते हैं। वहीं हमारे बेसिक शिक्षा परिषद के सैकड़ों शिक्षक अपने व्यक्तिगत व समुदायिक सहयोग से शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीक (आईसीटी) का प्रयोग कर गुणवत्तापरक शिक्षा देकर पूरे प्रदेश में अपने नाम का डंका बजा रहे हैं। पहले जहाँ लोग स्कूलों की बदहाली की चर्चा करते थे। अब लोगों की जुबान पर शिक्षकों द्वारा प्रयोग किए जा रहे प्रोजेक्टर, कंप्यूटर, लैपटॉप, सीसीटीवी, बायोमेट्रिक, टैब, मोबाइल, म्यूजिक सिस्टम, रेडियो, लाउडस्पीकर जैसे आईसीटी संसाधनों की बातें चढ़ चुकी हैं। कुछ ऐसे ही शिक्षकों को एक मंच मिला मऊ के पालिका कम्युनिटी हाल में जहाँ आईसीटी इनोवेटर्स ग्रुप द्वारा दिनांक 21 व 22 जुलाई को बेसिक शिक्षा महोत्सव का आयोजन किया गया और ऐसे ही शिक्षकों द्वारा स्वयं के प्रयास से विकसित आईसीटी संसाधनों के सहारे बेहतरीन कार्यों का नजारा दिखाया गया। ऐसे नवाचारी और कर्मठ शिक्षकों की हौंसला अफजाई करने स्वयं पहुँचे बेसिक शिक्षा निदेशक डॉ0 सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह व एससीआरटी और सर्व शिक्षा अभियान के संयुक्त निदेशक श्री अजय कुमार सिंह जी ने न केवल शिक्षकों द्वारा आईसीटी आधरित कार्यों को सराहा बल्कि उन्हें प्रमाण पत्र और स्मृति चिह्न देकर सम्मानित भी किया। प्रदेश के मुखिया से सम्मान पाकर पूरे प्रदेश के कोने–कोने से आए शिक्षकों ने और बेहतर करने का निश्चय किया।

आईसीटी इनोवेटर्स ग्रुप मऊ और बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित इस दो दिवसीय बेसिक शिक्षा महोत्सव मे बेसिक शिक्षा परिषद के निदेशक डॉ0 सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह ने कहा कि आईसीटी का प्रयोग बेसिक शिक्षा परिषद में मील का पत्थर साबित होगा। उन्होंने कहा कि बेसिक शिक्षा परिषद के सैकड़ों अध्यापक अपने निजी संसाधनों के प्रयोग से कावेंट स्कूलों को टक्कर देने में सक्षम हो रहे हैं जो आने वाले समय में अग्रणी भूमिका में होंगे। उन्होंने प्रदेश के

NOVATORS

समस्त शिक्षकों का आवाहन किया कि पिछले वर्ष की तुलना में अपने विद्यालय में कम से कम 5 नामांकन बढ़ायें तभी हम बेसिक शिक्षा के परिदृश्य को बदल पाने में सक्षम होंगे। उन्होंने कहा कि वर्तमान युग तकनीक का युग है और हम आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस की बात कर रहे हैं। ऐसे में शिक्षा में आईसीटी का प्रयोग आवश्यक ही नहीं अपरिहार्य है। उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजन हर जिले में होने चाहिए जिससे इसका फैलाव दूसरे शिक्षकों और स्कूलों में हो सके। एससीईआरटी और सर्व शिक्षा अभियान के संयुक्त निदेशक श्री अजय कुमार सिंह ने कहा कि जिस तरह से इस महोत्सव में आईसीटी प्रयोगकर्ता शिक्षकों ने अपने कार्यों का प्रस्तुतीकरण किया उससे यह महोत्सव एक नए युग की शुरुआत साबित होगा।

इससे पूर्व महोत्सव का उदघाटन मुख्य अतिथि मुख्य विकास अधिकारी श्री आशुतोष द्विवेदी, संयुक्त निदेशक सर्व शिक्षा अभियान श्री अजय कुमार सिंह, डीआईओएस श्री के.सी. भारती, मऊ बीएसए श्री ओपी त्रिपाठी, आईसीटी इनोवेटर्स ग्रुप के सतीश सिंह, मिशन शिक्षण संवाद टीम के डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र, रवि प्रताप सिंह, ज्योति कुमारी, खुर्शीद अहमद सहित विभिन्न अतिथियों ने माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर किया।

मुख्य विकास अधिकारी श्री आशुतोष द्विवेदी ने कहा कि शिक्षा में वह शक्ति है जो समाज की दशा और दिशा बदलती है। शिक्षक की गोद में सृजन और विनाश पलता है। इसलिए शिक्षक को बड़ी सतर्कता और जिम्मेदारी के साथ अपना बेहतर देने का प्रयास करना चाहिए। उत्तर प्रदेश एससीईआरटी के पूर्व निदेशक महेंद्र सिंह ने चित्रकला के माध्यम से गणित की शिक्षा देने को बात कही। एनसीईआरटी के प्रोफेसर ओपी सिंह ने कहा कि शिक्षक प्रशिक्षण में सीखे प्रयोगों को वास्तविक कक्षाओ में लागू करना चाहिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद और एसएसए के संयुक्त निदेशक अजय कुमार सिंह ने कहा कि शिक्षकों के आईसीटी द्वारा प्रदेश के विभिन्न परिषदीय विद्यालयों में बहुत अच्छा काम हो रहा है। उन्होंने शिक्षकों के प्रयासों और आईसीटी इनोवेशन ग्रुप के आयोजन की प्रशंसा की।

कार्यक्रम में विभिन्न जनपदों के लगभग 50 आईसीटी शिक्षकों द्वारा आईसीटी के क्षेत्र में किए जा रहे अपने कार्यो का पॉवर पॉइंट प्रस्तुतिकरण किया गया। पहला प्रस्तुतिकरण बस्ती जनपद के आदर्श प्राथमिक विद्यालय मूडघाट के प्रधानाध्यापक डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र ने अपने स्कूल में स्थापित स्मार्ट क्लास और आईसीटी के विविध क्षेत्रों में किए गए कार्यों को प्रस्तुत करके किया। मैनपुरी के शिक्षक इशरत अली ने अपने स्कूल में आईसीटी गतिविधियों का प्रस्तुतिकरण किया। गोंडा के धौरहरा प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक रवि प्रताप सिंह ने बताया कि किस तरह उन्होंने अपने स्कूल को शत प्रतिशत आईसीटी गतिविधियों का केंद्र बनाया है। झाँसी के विज्ञान शिक्षक डॉ0 खुर्शीद हसन ने विज्ञान में आईसीटी प्रयोग, ललितपुर के शिक्षक कृष्ण मुरारी उपाध्याय ने लीप विषय पर अपना प्रस्तुतिकरण दिया। मथुरा की डॉ0 अनिता मुदगल ने कम शिक्षक होने पर आईसीटी के फायदे बताये। प्राथमिक विद्यालय रकौली मऊ के प्रधानाध्यापक सतीश कुमार सिंह व सहायक अध्यापक सदफ कौसर ने अपने स्कूल को स्मार्ट स्कूल बनाने का प्रस्तुतिकरण किया। इसी तरह गाजियाबाद की नीरव शर्मा, हापुड़ की कोमल त्यागी, सहारनपुर नीलू चोपड़ा, विशाखा, गौतमबुद्धनगर से हरियाली श्रीवास्तव, फतेहपुर से आसिया फारूकी, नीलम भदौरिया, बलरामपुर से श्रीराम, वाराणसी से रविन्द्र सिंह, आजमगढ़ से प्रज्ञा राय, बदायूँ से कुंवरसेन, गाजीपुर से प्रियंका यादव, चित्रकूट से राज कुमार शर्मा, भदोही से ज्योति कुमारी तथा आशीष सिंह, महराजगंज से नागेंद्र चौरसिया, लखनऊ से अजिता सिंह, मोहिनी आभा, सुरेश जायसवाल, हरदोई से विजया अवस्थी, आशीष शुक्ल, गोरखपुर से

INDIA WATCH
NEWS WORLD

आशुतोष सिंह, अल्पा निगम, श्वेता, संतकबीरनगर से कन्हैया लाल, सिद्धार्थनगर से दुर्गेश मिश्र, मेरठ से यतिका पुंडीर, प्रतापगढ़ से विनय शुक्ल, बुलन्दशहर से फिरोज खान, हमीरपुर से वीरेंद्र परनामी, जौनपुर से शिवम सिंह, बलिया से उमेश सिंह, देवरिया से आफाक अहमद फरुखाबाद से अर्पण शाक्य, मिर्जापुर से श्रीकांत पाठक, सोनभद्र से दीनबंधु त्रिपाठी सहित विभिन्न जनपदों के शिक्षकों ने अपने आईसीटी प्रयोगों का प्रस्तुतिकरण किया। अन्त में सतीश कुमार सिंह के नेतृत्व में आयोजक मंडल द्वारा सभी अतिथियों और शिक्षकों को स्मृति चिह्न और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में नगर पालिका परिषद मऊ के चेयरमैन मोहम्मद तैयब पालकी एडी बेसिक आजमगढ़ वाईके सिंह, बीएसए गोरखपुर बी.एन. सिंह, पूर्व बीएसए मनिराम सिंह आदि ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया।

परिषदीय बच्चों के कार्यक्रमों ने सबका मन मोहा

कार्यक्रम में मऊ जनपद के विभिन्न परिषदीय स्कूलों के नन्हें–मुन्ने बच्चों द्वारा कई मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए जिसने सबका मन मोह लिया।

टीएलएम प्रदर्शनी रही आकर्षण का केंद्र

चित्रकूट के राज कुमार शर्मा की प्रसिद्ध टीएलएम प्रदर्शनी के अलावा मऊ जनपद के शिक्षको व छात्रों द्वारा बनाए गए टीएलएम व विज्ञान मॉडलों की प्रदर्शनी लोगो के आकर्षण का केंद्र रही।

निदशक के हाथों सम्मान पाकर गदगद हुए नवाचारी शिक्षक

कार्यक्रम के अंत मे बेसिक शिक्षा निदेशक डॉ सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह ने अपने हाथों आईसीटी के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रदेश के लगभग 100 शिक्षकों को प्रशस्ति पत्र और स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया।

मिशन पत्रिका व स्वरांजलि निदेशक को की गई भेंट

मिशन शिक्षण संवाद टीम द्वारा निदेशक डॉ0 सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह को मिशन पत्रिका का जुलाई अंक व मिशन टीम के शिक्षकों द्वारा पाठ्यपुस्तकों की कविताओं पर तैयार म्यूजिकल सीडी भेंट की गई।

मिशन रत्नों का जन्मदिन मनाया गया

कार्यक्रम के भव्य मंच पर मिशन शिक्षण संवाद टीम के सदस्यों डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र, डॉ0 खुर्शीद हसन व दीनबंधु त्रिपाठी का जन्मदिन 22 जुलाई को सभी अधिकारियों व सैकड़ों शिक्षकों के बीच मनाया गया। मंच पर एससीईआरटी और एसएसए के संयुक्त निदेशक श्री अजय कुमार सिंह और आयोजक सतीश कुमार सिंह की उपस्थिति में केक काटा गया। खुद संयुक्त निदेशक ने शिक्षकों को केक खिलाया। सभी सदस्यों ने इस यादगार पल को कभी न भूलने वाला कार्यक्रम बना दिया।

–मऊ से डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र की रिपोर्ट

मिशन गीत

मिशन शिक्षण संवाद ने हमें हौंसला दिलाया है।
शिक्षा की हर चुनौती से हमें लड़ना सिखाया है।
बच्चों को पढ़ाया,
खूब लिखवाया,
बहुत रटवाया फिर भी न समझे।
नवाचारी गतिविधियों ने
उन्हें पढ़ना सिखाया है।
मिशन शिक्षण संवाद ने हमें हौसला दिलाया है।
स्कूल हुआ सुंदर,
बाहर हो चाहें अंदर,
बच्चे बने धुरन्धर कोई न मानें
पुराने उन विचारों में
अब बदलाव आया है।
मिशन शिक्षण संवाद ने हमें हौंसला दिलाया है।
बच्चे और शिक्षक,
दोनों सीखे और सिखाते,
संग–संग मिलकर त्यौहार मनाते।
नन्हें–मुन्हों के चेहरों पर
खुशी का रंग छाया है।
मिशन शिक्षण संवाद ने हमें हौंसला दिलाया है।
कोई कसर न छोड़ी,
हमने कोशिशें की पूरी,
जो भी थी मजबूरी पर मान न मिला।
कपिलवस्तु महोत्सव ने हमें अब खास बनाया है।
मिशन शिक्षण संवाद ने हमें हौंसला दिलाया है।
शिक्षा की हर चुनौती से हमें लड़ना सिखाया है।

रचनाकार–
सुमन लता वर्मा
सहायक अध्यापक
इंग्लिश मीडियम प्राइमरी स्कूल,
दरीबा, ब्लॉक–सतांव, जिला–रायबरेली।

बेसिक शिक्षा
के
अनमोल रतन

अनमोल रत्न–1

सुशील कुमार (प्र०अ०)
प्राथमिक विद्यालय फिरोजाबाद
वि० क्षे०–सरसावा, सहारनपुर

मित्रों आज हम आपका परिचय मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्न शिक्षक साथी सुशील कुमार जी जनपद– सहारनपुर से करा रहे हैं। जिन्होंने अपनी सकारात्मक सोच और व्यवहार कुशलता की शक्ति से जनसंपर्क और जन सहभागिता के माध्यम बेसिक शिक्षा की अनेकों समस्याओं का समाधान खोज कर हम सब के लिए प्रेरक और अनुकरणीय प्रयास प्रस्तुत किया है। जो हमारे जैसे हजारों शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक साबित होगा।

आइये देखते हैं आपके द्वारा किए गये कुछ प्रेरक और अनुकरणीय प्रयासों को:–

मेरी बेसिक शिक्षा विभाग में नियुक्ति 01–07–2009 को प्राथमिक विद्यालय फजलपुर हबीब वि०क्षे० नजीबाबाद, जनपद–बिजनौर में सहायक अध्यापक पद पर हुई। मुझे प्रारंभ से ही अभिभावकों से सम्पर्क करना व उनकी समस्या जानना आदि अच्छा लगता था। मुझे विद्यालय में मध्यावकाश के दौरान जब भी समय मिलता तो मैं उन्हें बच्चों की पढ़ाई–लिखाई के प्रति जागरूक करने लगा। मैंने अभिभावकों से सम्पर्क के दौरान पाया कि उन्हें शासन की कल्याणकारी योजनाओं के विषय में भी अधिक जानकारी नही होती थी। मैंने प्रथम बैठक 22 दिसम्बर 2010 को ग्राम के मोहल्ला में की। अभिभावकों को उनके बच्चों की पढ़ाई–लिखाई के साथ–साथ उन्हें शासन की कल्याणकारी योजनाओं के बारे में बताना शुरू कर दिया। धीरे–धीरे अभिभावकों में मेरे प्रति अपनत्व की भावना बढ़ती गयी। अभिभावक अपनी समस्यायें लेकर विद्यालय आने लगे। मैं उनकी समस्याओं का यथासंभव समाधान करता रहा। ग्रामजनों को शासन की कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी प्रदान करने में तत्कालीन डी०एम० श्री जे० पी० गुप्ता आदि का सहयोग अनुकरणीय रहा। सन् 2015 में ZIIEI अरविंदो सोसायटी द्वारा मौलिक नवाचार आमन्त्रण किये गए। मैंने भी अपना नवाचार विद्यालय की बैठकों में जनसमुदाय, अभिभावकों की अधिक भागीदारी कैसे हो एवं उक्त भागीदारी से छात्रों के व्यवहार, आदतों एवं शिक्षा में गुणवत्ता परख वृद्धि एक अभिनव प्रयोग प्रेषित किया। मेरा उक्त नवाचार प्रदेश की नवाचार चयन टीम द्वारा चुना गया एवं समुदाय सहभागिता नवाचार के नाम से नवाचार Hand Book में सम्मिलित किया गया एवं 20 नवम्बर 2016 में लोकभवन लखनऊ में तत्कालीन CM श्री अखिलेश यादव जी द्वारा एक Samsung टैबलेट, शॉल, प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

मैं 20 अक्टूबर 2016 से प्रा०वि० फिरोजाबाद वि० क्षे० सरसावा जनपद सहारनपुर में प्र०अ० के पद पर कार्यरत हूँ। जब मैंने विद्यालय में पद भार ग्रहण किया तो विद्यालय का भौतिक परिवेश अच्छा नहीं था। विद्यालय में कक्षा कक्ष केवल 4 हैं। एक कक्षा बरामदे में चलानी होती है। 02 कमरों का फर्श टूटा हुआ था। मैंने ग्राम प्रधान जी से उक्त कार्य कराने का निवेदन किया। किन्तु उन्होंने मना कर दिया। तत्पश्चात मैंने विद्यालय के ऐसे पुरातन छात्र जो वर्तमान में कोई न कोई रोजगारपरक कार्य कर रहे हैं उनकी सूची बनाई। उनके मोबाइल नम्बर लिए और उनसे

विद्यालय की यथासंभव यथारूप से आर्थिक सहायता माँगी। उक्त परिणाम आश्चर्यजनक रूप से सामने आया और हमने स्वयं के निवेश व पुरातन छात्र निवेश व जागरूक अभिभावकों के निवेश से 36000 रु० एकत्रित कर कक्षा– 03, 04 व 05 के लिए फर्नीचर की व्यवस्था की। अभी हाल ही में दो कमरों के फर्श की मरम्मत के लिए 19000 रू० एकत्र किए गए। 1000 रु० प्रति अध्यापक व अन्य धन मैंने व अभिभावकों ने स्वेच्छा से देकर विद्यालय के विकास में योगदान कर रहे हैं। विद्यालय के अध्यापकों ने स्वयं सहायता से समस्त बच्चों को टाई, बेल्ट, आई०कार्ड उपलब्ध कराए हैं। मैं उक्त कार्य में अपने साथी अध्यापकों के सहयोग से ही कर पा रहा हूँ। विद्यालय समुदाय जागरूकता रैली–गोष्ठी में सदैव तैयार रहते हैं। मेरे पास स्टॉफ की प्रशंसा करने के लिए शब्द नही हैं। मैं फिरोजाबाद के अभिभावकों को नमन करता हूँ कि वे पेशे से मजदूर होने के बावजूद विद्यालय की सहायता करने के लिए मस्जिद मंदिरों की सहायता की तरह तैयार रहते हैं। विद्यालय का नामांकन वर्तमान में 275 हैं। कार्यरत अध्यापक 06 हैं। विद्यालय को BSA सर ने इंग्लिश मीडियम विद्यालय में चयनित किया है। विगत माह में ब्लॉक सरसावा के top 10 उत्कृष्ट विद्यालयों की सूची में चयनित किया गया है। विद्यालय में बाल संसद, बाल अखबार, भविष्य सृजन, खेल– खेल में शिक्षा आदि नवाचारों को सम्मिलित करके छात्र–छात्राओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने का प्रयास किया जा रहा है।

अनमोल रत्न–2

आशुतोष कुमार सिंह
प्रा० वि० आराजी बसडीहा,
पिपराइच, गोरखपुर

मित्रों आज हम आपका परिचय मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से बेसिक शिक्षा की जनपद गोरखपुर से एक ऐसी अनमोल रत्न टीम से परिचय करा रहे हैं। जिन्होंने अपने सामूहिक और संगठित प्रयासों से मात्र कुछ सत्रों में अपने विद्यालय को शून्य से शिखर की दिशा में पहुँचा दिया है।

हमारे अनेकों साथी कहते थे कि इतने कम समय में क्या कोई विद्यालय बदला जा सकता है? आज इस विद्यालय की टीम भावना ने यह प्रमाणित कर दिया है यदि विद्यालय के समस्त शिक्षक आपस में टीम भावना के साथ हाथ से हाथ मिलाकर काम करें तो बेसिक शिक्षा के हजारों विद्यालय शिखर पर पहुँचते नजर आने लगे। क्योंकि आज अनेकों विद्यालय आपसी तालमेल के अभाव में बेबस और असहाय नजर आ रहे हैं।

लेकिन प्राथमिक विद्यालय आराजी बसडीहा के प्रधानाध्यापक आशुतोष कुमार सिंह जी ने अपनी सकारात्मक सोच और व्यवहार कुशलता के साथ विद्यालय के सभी सहयोगियों की संगठित शक्ति से विद्यालय को मात्र कुछ समय में जनपद के श्रेष्ठ विद्यालयों के बीच स्थापित कर दिखाया। जो हम सबके लिए अनुकरणीय और प्रेरक है।

आइए देखते हैं आपके द्वारा किए गये कुछ प्रेरक और अनुकरणीय प्रयासों को:–

मेरे विद्यालय का नाम प्राथमिक विद्यालय आराजी बसडीला है। यह विद्यालय पिपराइच ब्लॉक में गोरखपुर जिले में स्थित है।

इस विद्यालय में मेरी नियुक्ति प्रधानाध्यापक पद पर 2 जुलाई 2016 में हुई थी। विद्यालय में कुल 4 टीचिंग स्टॉफ हैं–

1)श्री आशुतोष कुमार सिंह (प्रधानाध्यापक)
2)श्रीमती अर्चना सिंह (सहायक अध्यापक)
3)श्रीमती संयोगिता सिंह (सहायक अध्यापक)
4)मोनिका श्रीवास्तव (सहायक अध्यापक)

मेरी ज्वाइनिंग के समय विद्यालय की दशा अत्याधिक खराब थी। अतः मैंने विद्यालय की दशा सुधारने के लिए योजना बनाई। पहले भवन के टूटे–फूटे फर्श की मरम्मत करवायी। प्रत्येक कक्षा में ब्लैकबोर्ड सही कराया। ऑफिस व सभी कक्षा में लाइट व पंखे की व्यवस्था की। विगत वर्ष मात्र विद्यालय में 55 छात्रों का नामांकन था और 15–20 बच्चे ही प्रतिदिन स्कूल आते

थे। मैंने अपने स्कूल स्टाफ के सहयोग से गाँव जाकर अभिभावकों से सम्पर्क किया और सभी बच्चों को विद्यालय आने के लिए प्रेरित किया। इससे 2017 –2018 में 55 से बढ़कर नामांकन 147 हो गया। इस सत्र में बच्चों की कक्षावार प्रवेश परीक्षा लेकर उनका नामांकन किया गया। वर्तमान सत्र 2018–19 में मेरे विद्यालय में कुल छात्रों का नामांकन 190 हो गया है।

हमारे विद्यालय में मात्र 3 कमरे ही हैं। जिसके वजह से उससे अधिक नामांकन नहीं कर पा रहे है।

मैंने अपने विद्यालय को कान्वेंट मॉडल स्कूल के तर्ज पर विकसित करने की योजना बनाई। जिससे छात्रों को वह सभी सुविधाएँ प्राप्त हो सके जो एक कान्वेंट स्कूल का बच्चा प्राप्त करता है और छात्रों के मन में किसी प्रकार की हीन भावना न विकसित हो। इसके लिए मैंने अपने स्कूल स्टाफ के सहयोग से प्रत्येक कक्षा में कार्पेट व कॉलीन की व्यवस्था की, हर कमरे में डेस्क व बेंच की व्यवस्था की ।आज के समय में हमारे स्टॉफ के आर्थिक सहयोग से हर कक्षा में व्हाइट बोर्ड लग गया है। इसके बाद हम सभी ने मिलकर अपने स्कूल के लिए प्रोजेक्टर, स्पीकर, साउंड सिस्टम व लैपटॉप की व्यवस्था की। जिससे शिक्षण कार्य अत्याधिक सुगम हो गया है। सभी छात्र प्रोजेक्टर की सहायता से अपने विषय के तथ्यों को मूर्त उदाहरण के रूप में देखते हैं और सरलतापूर्वक समझ जाते हैं।

प्रतिदिन स्पीकर की सहायता से प्रार्थना स्थल पर विभिन्न गतिविधियां करायी जाती हैं।

इसके अतिरिक्त सभी कक्षा में विषय व कक्षा स्तर के अनुकूल शिक्षकों द्वारा निर्मित टीएलएम (टीचिंग लर्निंग मेटैरियल), चित्र चार्ट व मॉडल की व्यवस्था की गयी हैं।

हमारे विद्यालय के बी.डी.ओ. (ब्लॉक डेवलपमेंट आफिसर) श्री ज्ञानेंद्र सिंह व संयुक्त निदेशक श्री एस. एन. सिंह द्वारा निरीक्षण किया गया। इसके अतिरिक्त स्वयं बीएसए महोदय एवम स्थानीय अधिकारीगण विद्यालय की शैक्षिक गुणवत्ता, प्रबंधन व व्यवस्था को देखकर अत्यधिक प्रभावित व संतुष्ट हुए।

शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए हमारे विद्यालय परिवार को कई बार सम्मानित किया जा चुका हैः–

1) कपिलवस्तु शैक्षिक गुणवत्ता सेमिनार में मुझे उत्कृष्ट शैक्षिक कार्य के लिए सिद्धार्थ नगर के बीएसए के द्वारा सम्मानित किया गया।

2) मिशन शिक्षण संवाद कार्यशाला, लखनऊ में मुझको प्रतिभाग करने का अवसर प्राप्त हुआ जहाँ मुझे सम्मानित किया गया।

3) नई उम्मीद सामाजिक संस्था के द्वारा मेरे पूरे विद्यालय परिवार को गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

4) मेरे पूरे विद्यालय परिवार को गोरखपुर BSA के द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।

हमारे विद्यालय की उपलब्धियों का कई बार समाचार पत्रों जैसे–दैनिक जागरण, अमर उजाला, हिंदुस्तान, सहारा, नव भारत टाइम्स, वूमेन एक्सप्रेस, रफ्तार में प्रकाशन हुआ है। हमारे विद्यालय को दो बार मीडिया के द्वारा डॉक्यूमेंट्री मूवी बनाने के लिए भी चुना गया।

हमारे विद्यालय के बारे में टीवी के India news, News Nation, Prime news, ETv चैनल पर दिखाया जा चुका है। आज के समय में गोरखपुर के उत्कृष्ट विद्यालयों की सूची में हमारा विद्यालय का भी स्थान पर है।

सभी शिक्षकों के प्रयास से आज के समय में सभी बच्चे अंग्रेजी में अपना परिचय दे सकते है और अंग्रेजी के छोटे– छोटे वाक्यों को भी बोलना सीख रहे हैं। छात्रों के अधिगम स्तर में भी बहुत सुधार हुआ है।

अनमोल रत्न–3

वन्दना श्रीवास्तव
प्राइमरी मॉडल इंग्लिश मीडियम स्कूल
अंदावा ब्लॉक– बहादुरपुर, जनपद– इलाहाबाद

मित्रों आज के परिचय में हैं जनपद इलाहाबाद की अनमोल रत्न शिक्षिका बहन वन्दना श्रीवास्तव जी। जिन्होंने बड़ी ही ईमानदारी और सहजता से अपने विद्यालय के विकास की कहानी को भेजा है। हम सभी लोग जानते हैं कि कोई अपवाद ही हो जो बिना किसी सहयोग के अकेले ही विद्यालय को उत्कृष्ट स्थान तक पहुँचाया हो। लेकिन हमें कई बार अनमोल रत्न लिखने में असहज स्थितियों का सामना करना पड़ा जब हमारे साथी या तो दूसरे की मेहनत को अपनी बता देते हैं अथवा अन्य सहयोगियों के सहयोग को महत्वहीन समझकर उनका कहीं जिक्र नहीं करते हैं। वहीं आप जैसे अनमोल रत्न भी है जिन्होंने अपनी सकारात्मक सोच और व्यवहार कुशलता से सभी को समान सम्मान देते हुए अपने विद्यालय को समाज के सामने आदर्श बनाकर प्रस्तुत किया। यही किसी विद्यालय की वास्तविक प्रगति है जब वहाँ का पूरा स्टाफ और बच्चे प्रेम और प्रोत्साहन की नीति से प्रगति के पथ पर अग्रसर हों। ऐसी प्रेरक अनमोल रत्न बहन और उनके समस्त विद्यालय परिवार को मिशन परिवार की ओर से हार्दिक नमन करते हैं।

आइए देखते हैं आपके द्वारा किए गये कुछ प्रेरक और अनुकरणीय प्रयासों को:–

मैं वंदना श्रीवास्तव प्रधानाध्यापिका प्राइमरी मॉडल इंग्लिश मीडियम स्कूल अंदावा ब्लॉक– बहादुरपुर, जनपद– इलाहाबाद में दिनांक 01 अप्रैल 2015 से कार्यरत हूँ बेसिक शिक्षा विभाग में मेरी प्रथम नियुक्ति 01–12–1999 की है जब मेरा चयन इंग्लिश मीडियम मॉडल स्कूल के लिए हो गया तब इस स्कूल को कॉन्वेंट का लुक देना और उसका संचालन कान्वेंट की तरह करना मेरी नैतिक जिम्मेदारी बन गई। विद्यालय की रंगाई–पुताई उसका भौतिक परिवेश सुधारने के लिए मैंने और मेरे स्टाफ ने बहुत मेहनत की सर्वप्रथम हम लोगों ने अपने स्वयं के पैसे से बच्चों को प्राइवेट वोटर आई कार्ड कॉपी पेंसिल रबड़ बॉक्स इत्यादि बाँटे जिससे बच्चों की उपस्थिति

बढ़ी और अभिभावकों को भी खुशी हुई हम लोगों ने कुछ एनजीओ से भी संपर्क किया जिसमें सोनाटा फाइनेंस लिमिटेड ने हमारी मदद की और मेरे विद्यालय को डेस्क बेंच ग्रीन बोर्ड CCTV कैमरा इनवर्टर, कंप्यूटर आदि देकर मेरे विद्यालय का कायाकल्प कर दिया। साथ ही आशुतोष मेमोरियल ट्रस्ट ने मेरे विद्यालय को छोटे बच्चों को बैठने के लिए कुर्सियां भी दी। स्टेट बैंक की तरफ से सभी बच्चों को पेंसिल बॉक्स और नोटबुक बांटे गए। पूरे विद्यालय का वातावरण अच्छा होने के कारण हमारे विद्यालय में प्राइवेट स्कूल के भी बच्चे आने लगे। हमारे यहाँ पर प्रतिज्ञा GK क्वेश्चन प्रतिदिन होते हैं। योगा और इंग्लिश की 20 एक्टिविटी कराई जाती है। कक्षा–3 से लेकर 5 तक के सभी बच्चे अपना परिचय इंग्लिश में देते हैं मेरे यहाँ शिवा आर्य पुत्र मनोज आर्य का चयन नवोदय विद्यालय के लिए हो चुका है। हमारे यहाँ के बच्चे ब्लॉक स्तर पर और जिला स्तर पर खेलकूद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार पा चुके हैं 4 जुलाई 2017 को हमारे स्कूल में एडी बेसिक के कर कमलों द्वारा फल वितरण का कार्य आरंभ किया गया। पानी बरसने के बावजूद 122 बच्चों की उपस्थिति देखकर बहुत प्रसन्न हुए 14 जुलाई 2017 को हमारे यहां के बच्चों ने ETV पर प्रोग्राम किया हमारे विद्यालय का निरीक्षण खंड शिक्षा अधिकारी द्वारा, चार विधायकों की टीम द्वारा, सुप्रीम कोर्ट की टीम द्वारा, सीमैट की टीम द्वारा, सीईओ सर द्वारा समय–समय पर निरीक्षण किया गया सभी अधिकारी विद्यालय की प्रगति से बहुत खुश हुए। अभिभावक आकर कहते हैं कि मैडम ऐसा तो सरकारी स्कूल नहीं होता है जैसा आप सभी ने अच्छा बना दिया है। अच्छा लगता है जब अभिभावक कहते हैं कि अब हमारे सभी बच्चे यहीं पढ़ेंगे। जहाँ पहले नामांकन 153 का था वही नामांकन 223 का है। परियोजना की तरफ से मेरे विद्यालय में सोलर सिस्टम, समरसेबल और वाटर प्यूरीफायर भी लगा है जिससे विद्यालय की छटा में चार चांद लग गए मेरी अभिलाषा है कि मैं ऐसे ही अपने विद्यालय और बच्चों की निरंतर प्रगति बनाए रखें। अभी मुझे भी 4 अप्रैल को शिक्षा विभाग की तरफ से उत्कृष्ट शिक्षक के पुरस्कार से नवाजा गया। जो मेरे लिए बहुत ही सम्मान और गौरव की बात है आप सभी के सहयोग से मैं अपने विद्यालय को निरंतर आगे बढ़ाती रहूँगी। मेरे विद्यालय की प्रगति में मेरे स्टाफ का बहुत बड़ा योगदान है और सभी अधिकारियों का भी। इन सभी को मैं धन्यवाद देती हूँ और मैं आगे भी अपने विद्यालय को आगे बढ़ाने का प्रयास करती रहूँगी अभी नवाचार प्रदर्शनी में भी मुझे पुरस्कार मिला और डाइट इलाहाबाद में भी मुझे पुरस्कार दिया मैं आगे भी इसी तरीके से अपने विद्यालय के लिए अच्छे से अच्छा कार्य करती रहूँगी अपने बच्चों के लिए प्रगति का कार्य सोचती रहूँगी। उनके भविष्य को संवारती रहूँगी।

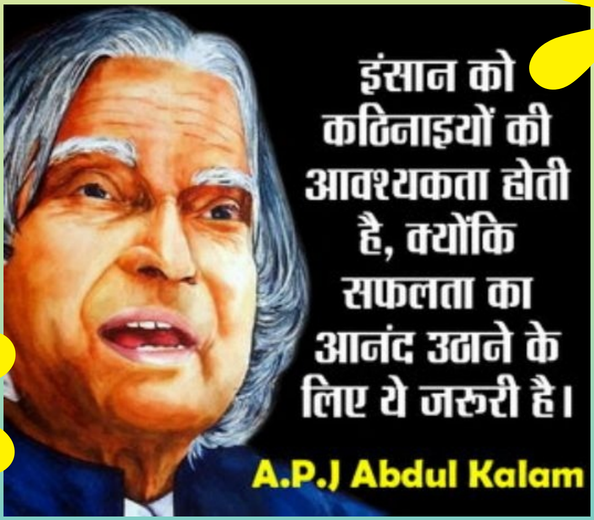

अनमोल रत्न–4

ऋचा अग्रवाल
English medium primary school Nadanwara
जखौरा, ललितपुर

मित्रों आज हम आपका परिचय मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से जनपद–ललितपुर से बेसिक शिक्षा के एक ऐसे विद्यालय से करा रहे हैं। जो समाज के बीच अपनी पहचान आदर्श विद्यालय के रूप में रखता है। विद्यालय परिवार की सकारात्मक सोच और परिवर्तन की प्रेरणा से अपने विद्यालय का चहुँमुखी विकास करने में सफलता प्राप्त की। जो हम सब के लिए अनुकरणीय गर्व और गौरव के साथ प्रेरक और अनुकरणीय भी है।

आइए देखते हैं विद्यालय परिवार द्वारा किए गये कुछ प्रेरक और अनुकरणीय प्रयासों कोः–

हमारा विद्यालय ललितपुर जिले के प्राथमिक विद्यालय मड़ियन ब्लाक–जखौरा था। अब मेरा चयन English medium primary school Nadanwara में हो गया है। मैंने मड़ियन में 2 1/2 वर्ष प्रधान अध्यापक के पद पर कार्य किया है। जहाँ मेरे द्वारा किये गये प्रयास निम्न हैंः –

१–मेरे स्कूल में बच्चों के लिये खेल का मैदान नहीं था। मेरी व गूँज संस्था की प्रेरणा से गाँव वालों द्वारा ग्राम सभा की ऊबड़ खाबड़ जमीन पर निःशुल्क खेल का मैदान बनाया गया। जिसमें आज गाँव के सभी बच्चे खेलते हैं।

२– विद्यालय में दो सहयोगी शिक्षामित्र हैं जिनके सहयोग से, उनके साथ मिलकर कक्षा–4 व 5 के जो बच्चे अच्छे थे। जिनमें 4 के 20 व 5 के 17 बच्चों को चुनकर विद्याज्ञान की तैयारी करायी। जिस कारण एक बच्चा आश्रम पद्धति में निकल गया और 17 बच्चे नवोदय की परीक्षा देंगे।

३–इस वर्ष विद्यालय को 2017 का स्वच्छ विद्यालय के पुरुस्कार से सम्मानित किया गया।

४– इस वर्ष ६ बच्चों को लेकर गूँज संस्था के प्रतिबिम्ब प्रोग्राम में ले गयी जहाँ श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिये गूँज के फाउंडर अंशु गुप्ता जी द्वारा बच्चों को ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया। जिस प्रोग्राम में 4 राज्यों राजस्थान, बिहार, उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश के बच्चों ने

प्रतिभाग किया।
५–मेरे स्कूल में मेरे व बच्चों के द्वारा Wall paintings की गयी।
स्कूल में नेडा द्वारा solar RO water purifier लगाया गया है।विद्यालय में बच्चों को समय–समय पर पुरुस्कार देकर प्रोत्साहित किया जाता है।
६–बच्चों द्वारा विभिन्न प्रोग्राम जैसे नाटक, कठपुतली शो और डांस तैयार कराकर जिले पर कई बार प्रस्तुत किया गया।
७–मैंने जब स्कूल में कार्यभार ग्रहण किया था तब मात्र २ पेड़ थे। आज मेरे प्रयास से स्कूल में किचन गार्डन है और 50 प्रकार के पौधे हैं। जिसमें आम, केला, अमरूद, आलू, प्याज, लहसुन, टमाटर, मटर, भिन्डी, नीबू, आँवला, मुनगा की फली, कचनार की कली, मिर्च, गोभी, गुड़हल, गुलाब, मीठा नीम, सागौन, शीशम, अशोक आदि विभिन्न प्रकार के पेड़–पौधे हैं। मेरा नाम जिले से रानी लक्ष्मीबाई पुरुस्कार के लिये नामित किया गया था।
८–मेरे स्कूल में प्रतिदिन बच्चों को स्वच्छता की रोज चेकिंग कर स्वच्छ रहने के लिये प्रेरित किया जाता है व खाने से पहले व शौच के बाद साबुन से हाथ धुलवाये जाते हैं।
९–मेरे स्कूल के बच्चे आठ लाइन का इंग्लिश में परिचय, 1000 तक की संख्याओं के अंग्रेजी में, 29 राजधानियों के नाम, हिन्दी में –विलोम शब्द, पर्यायवाची, मुहावरे, प्रार्थना पत्र, अंग्रेजी में छोटे छोटे वाक्य बनाना, नाउन की परिभाषा, अपोजिट शब्द, गणित में जोड़– घटाओ, गुणा–भाग के अलावा भिन्न, प्रतिशत, लाभ–हानि, ब्याज ल.स., म.स., अनुपात, औसत आदि टॉपिक आसानी से कर लेते हैं।

राम जी शर्मा (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय नगला
मके विकासखंड–ताखा जनपद–इटावा

अनमोल रत्न–5

एक प्रयोग जिसने बच्चों को पहुँचाया शिखर पर

प्रयोग का नामः–

घर–घर जाकर अभिभावकों को विद्यालय में नामांकन कराने के लिए प्रेरित करना विद्यालय के बच्चों को विद्याज्ञान, आश्रम पद्धति, जनपद स्तरीय सामान्य ज्ञान व प्रतिभा खोज परीक्षा एवं निबंध प्रतियोगिता की विशेष तैयारी कराकर उनका उक्त में चयन होने पर गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा देने वाला शिक्षण संस्थान बना।

प्रारंभ करने का माह एवं वर्षः– जुलाई 2016

विधि जो अपनाई गई है विद्यालय में नामांकन बढ़ाने के लिएः–

पोस्टर, पम्पलेट, होर्डिंग, बैनर के माध्यम से विद्यालय का प्रचार–प्रसार किया गया। मांटेसरी विद्यालयों में पढ़ रहे बच्चों के अभिभावकों से संपर्क करके गुणवत्तापूर्ण और अच्छी शिक्षा देने का वादा किया गया, नामांकन में बढ़ोत्तरी हुई। बच्चों में आत्मविश्वास एवं उच्च भावना लाने के लिए निःशुल्क टाई बेल्ट आई कार्ड का वितरण किया। शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए लैपटॉप, स्पीकर एवं स्मार्टफोन के माध्यम से संबंधित पाठ्यक्रम पर आधारित ऑडियो, वीडियो एनिमेशन और ग्राफिक्स के माध्यम से तकनीकी शिक्षा प्रदान की गई। बच्चों में रचनात्मकता बढ़ाने के लिए बच्चों को कठपुतली, मुखौटे और गलब्स पपेट बनाने सिखाए जाते हैं और वेस्ट मेटेरियल से बनी वस्तुएँ और झूमर बनाना सिखाया जाता है। बच्चों को प्रतिदिन सुविचार, प्रतिज्ञा, सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी समाचार पत्रों की मुख्य सुर्खियों से अवगत कराया जाता है। बच्चों को मध्यान्ह भोजन, फल, दूध नियमित रूप से पंक्तिबद्ध तरीकों से चटाई ऊपर बैठकर भोजन मंत्र उच्चारण

के उपरांत कराया जाता है। सभी बच्चों की कॉपी किताबों पर कवर नेमस्लिप लगाई गई है। प्रत्येक विषय के पाठ्यक्रम की आवश्यकता अनुसार शिक्षण सामग्री अंग्रेजी माध्यम स्कूलों की तरह बनाई गई है। अखबार से प्रसिद्ध हस्तियों, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, अभिनेता, खिलाड़ियों और दैनिक जीवन की वस्तुओं का संकलन करके 100–100 पेज दो फाइल्स बनाई गई हैं। मोहर एक काम अनेक एक नया नवाचार है जिसमें विभिन्न प्रकार के जानवरों, पक्षियों, वस्तुओं के चित्रों को बच्चों की कॉपियों में मोहर के माध्यम से छापकर हिंदी, अंग्रेजी व गणित विषय में अनेक प्रकार के काम दे सकते हैं। विद्यालय के बच्चों को कई बार ऐतिहासिक स्थानों का शैक्षिक भ्रमण, जनपद इटावा की नुमाइश प्रदर्शनी का भ्रमण कराया गया है।

कक्षा–5 के बच्चों को विद्याज्ञान नवोदय, आश्रम पद्धति में चयन के लिए एवं जनपद स्तरीय सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता प्रतिभा खोज परीक्षा के लिए विद्यालय समय के अतिरिक्त समय देकर परीक्षा की तैयारी करवाई जाती है। इसके लिए गणित, हिंदी, सामान्य ज्ञान, तर्कशक्ति, अंग्रेजी आदि विषयों की अलग–अलग तैयारी करवाई जाती है। बच्चों का मूल्यांकन करने के लिए साप्ताहिक टेस्ट सीरीज आंसर की पुस्तिका पर करवाया जाता है। स्थान पाने वाले छात्रों को पुरस्कृत किया जाता है।

परिणामः–

जब 2017 में विद्यालय के बच्चों का चयन नवोदय एवं आश्रम पद्धति विद्यालयों में हुआ तो ग्रामवासियों में विश्वास जागा कि सरकारी स्कूलों में भी गुणवत्तापूर्ण एवं अच्छी शिक्षा प्राप्त होती है। इसके परिणामस्वरुप विद्यालय में बहुत अधिक संख्या में नामांकन में बढ़ोतरी हुई। ब्लॉक स्तर एवं जनपद स्तर पर विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएँ, खेल एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बच्चों ने स्थान प्राप्त करके शील्ड, मेडल एवं प्रशस्ति पत्र प्राप्त कर विद्यालय एवं गांव का नाम रोशन किया। इससे विद्यालय में नामांकन में बढ़ोतरी हुई।

अब्दुल इरशाद,
प्रा० वि० रसूलपुर ,
क्षेत्र – बिसंडा , बाँदा

अनमोल रत्न–6

मित्रों आज हम आपका परिचय मिशन शिक्षण संवाद बांदा के माध्यम एक ऐसे अनमोल रत्न शिक्षक साथी से करा रहे हैं। जिनकी कोशिश ने समाज के बीच बेसिक शिक्षा का विश्वास मजबूत किया। जिससे छात्र उपस्थिति और नामांकन जैसी महत्वपूर्ण समस्या के समाधान पर सफलता प्राप्त की है। जो हम सब के लिए अनुकरणीय और प्रेरक है।

आइए देखते हैं आपके द्वारा किए गये कुछ प्रेरक और अनुकरणीय प्रयासों को:–

विद्यालय में नियुक्ति के पश्चात मैंने देखा कि नामांकन के सापेक्ष दैनिक उपस्थिति आधी भी नहीं है। अपने स्तर से जानकारी लेने पर ज्ञात हुआ कि कुछ बच्चे स्कूल में नामांकन करवा कर प्राइवेट स्कूल में पढ़ते हैं। जबकि कुछ लोग जिले से बाहर हैं। मेरी प्राथमिकता दैनिक उपस्थिति को ६०: से अधिक करना और नामांकन को १०० प्रतिशत सही रखना था। स्कूल में पहले प्रार्थना पी०टी० आदि भी नियमित नहीं होती थी। बच्चों को uniform तो मिली थी लेकिन साफ सफाई का स्तर बहुत खराब था। मैं जब प्रोमोशन पर विद्यालय पहुँचा तो सिर्फ मैं अकेला ही था। कोई और अध्यापक या शिक्षामित्र नहीं था। इस सम्बन्ध में खंड शिक्षा अधिकारी महोदय से निवेदन कर विद्यालय प्रबन्ध समिति से प्रस्ताव बना कर मो० आकिब जावेद (स०अ०) को अस्थाई रूप से विद्यालय से सम्बद्ध करवाया। प्रतिदिन प्रार्थना, पी० टी०, खेलकूद आदि का आयोजन सुनिश्चित किया। बच्चों को प्रतिदिन साफ–सफाई, सामान्य ज्ञान आदि के बारे में जानकारी देने हेतु समय सारिणी में आधे घंटे का एक वादन लगाया गया। प्रबन्ध समिति की मासिक बैठकों को नियमित किया। स्टाफ के सहयोग से सभी बच्चों को i card की व्यवस्था, ऑफिस हेतु फर्नीचर एवं अन्य आवश्यक चीजों का क्रय विद्यालय के लिए किया गया। सितम्बर २०१७ में श्री राजकुमार (स०अ०) की नियुक्ति विद्यालय में हो गयी। विद्यालय में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ–साथ बच्चों के सम्पूर्ण विकास हेतु अन्य क्रिया कलाप करवाए गये। फलस्वरुप बच्चों की दैनिक उपस्थिति ६०: से अधिक रहने लगी। साथ ही जो बच्चे प्राइवेट स्कूल में पढ़ते थे अब वह पुन: विद्यालय आने लगे। २०१६ में ८६ के सापेक्ष २०१८ में नामांकन १०३ हो गया है। विद्यालय अपने ब्लॉक में श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए अंग्रेजी माध्यम विद्यालय के रूप में भी चुना गया। उत्कृष्ट विद्यालय की सूची में भी प्रा०वि० रसूलपुर को ब्लाक में दूसरे स्थान पर जगह मिली है। विद्यालय स्टाफ का आपसी सामंजस्य एवं सहयोग ही इस सफलता के लिए सबसे महत्वपूर्ण है।

अनमोल रत्न–7

ज्ञान प्रकाश
प्रा० वि० जैतपुर – फफूंद
विख –भाग्यनगर ,
जनपद–औरैया

मित्रों आज हम आपका परिचय मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से जनपद–औरैया से बेसिक शिक्षा के एक ऐसे विद्यालय से करा रहे हैं। जो समाज के बीच अपनी पहचान आदर्श विद्यालय के रूप में रखता है। हजार मील का सफर भी पहले कदम से ही तय होता है विद्यालय परिवार की ऐसी सकारात्मक संकल्प की सोच और परिवर्तन की प्रेरणा के बल पर सामाजिक सहयोग से अपने विद्यालय का चहुँमुखी विकास करने में सफलता प्राप्त की। जो हम सब के लिए अनुकरणीय गर्व और गौरव के साथ प्रेरक और अनुकरणीय भी है।

आइये देखते हैं विद्यालय परिवार द्वारा किए गये कुछ प्रेरक और अनुकरणीय प्रयासों को:–

सर्वप्रथम मेरी नियुक्ति 14 दिसम्बर 2009 में अपने ही जनपद के वि.ख.–ऐरवाकटरा के प्रा.वि.शेखूपुर में हुई, मार्च 2013 में प्रा. वि. भटौली फफूंद, विख–सहार में स्थानान्तरण और पदोन्नति उपरान्त 15 सितम्बर 2015 को वर्तमान विद्यालय में प्र.अ. का पदभार संभालने की जिम्मेदारी मिली।

कार्यभार ग्रहण से पूर्व विद्यालय की स्थिति :

▪ जहाँ चाहरदीवारी और पेड़–पौधे से विहीन विशाल परिसरयुक्त अच्छी स्थिति में विद्यालय भवन, दो सहायक शिक्षिकाएं कुल पंजीकृत 114 में से 14 बच्चों के साथ उपस्थित मिलीं। वहाँ स्वस्थ शैक्षिक व भौतिक परिवेश व अनुशासन के पूर्ण अभाव के चलते अभिभावकों का विद्यालय से कोई लगाव नहीं रह गया था कुछ अभिभावकों ने बच्चों का नामांकन निजी विद्यालय में करा दिया था और इस विद्यालय को विद्यालय कहना और सुनना भी पसंद नहीं कर

रहे थे। मन व्यथित हुआ पर तत्काल व्यवस्था परिवर्तन का दृढ़संकल्प लेकर विद्यालय को यथासंभव कम से कम समय में निजी विद्यालय से बेहतर बनाने हेतु प्रथम दिवस से बदलाव की मुहिम में जुट गया।

छात्र उपस्थिति बढ़ाने हेतु प्रयास :

▪परिवार के भरण पोषण हेतु बच्चों को झाडू–पंखा बनाने में लगाये रखने वाले अभिभावकों से लगातार शिक्षा के महत्व पर बात करके अपनी जिम्मेदारी और विश्वास पर बच्चों को विद्यालय भेजने के विशेष अनुरोध करने पर कुछ अभिभावकों ने अपने बच्चों को विद्यालय भेजना प्रारम्भ किया जिससे छात्र संख्या में कुछ वृद्धि हुई । तत्पश्चात सहायक शिक्षिकाओं की सहमति से हम तीनों शिक्षकों ने जिम्मेदारी लेते हुए हर परिस्थिति में स्वअनुशासित होकर नियमित रूप से विद्यालय समय से 20 मिनट पूर्व पहुँचकर दैनिक श्यामपट्ट सन्देश कार्य , माइक व साउंड सिस्टम की व्यवस्था के साथ प्रार्थना, राष्ट्रगान, योगासन उपरांत समय से कक्षा संचालन, गतिविधियों के साथ साथ खेलकूद की शुरुआत की। जिसे देखकर अभिभावकों में विद्यालय के प्रति विश्वास में वृद्धि हुई फलस्वरूप छात्र उपस्थिति में क्रमशः बढ़ोत्तरी होने लगी। इस हेतु प्रयास निरन्तर जारी रहा और आगे भी रहेगा।

परिवेश में बदलाव का प्रयास :

▪ विद्यालय के सुन्दर भौतिक एवं शैक्षिक परिवेश एक साथ ध्यान रखते हुए विद्यालय की आकर्षक रंगाई –पुताई, वॉल पेंटिग , दीवारों पर टीएलएम निर्माण ,प्रेरक सदविचारों को लिखाने के साथ आफिस में नोटिस बोर्ड ,खिड़कियों के पर्दे, फर्श पर कार्पेट, गुलदस्तों सहित विशेष साज सज्जा के साथ पर्याप्त कुर्सी–मेजों की व्यवस्था, हिन्दी, अंग्रेजी वर्णमाला व अंकों की मोहरें मंगाकर बच्चों को कक्षा एवं गृहकार्य देने प्रारंभ किया।

स्वच्छ विद्यालय ,सुन्दर विद्यालय की मुहिम :

▪ स्वच्छता सम्बन्धी आदतें विकसित करने के क्रम में बच्चों को नियमित साबुन या हैण्डवाश से हाथ धुलकर पंक्तिबद्ध बैठाकर भोजन की व्यवस्था प्रारंभ करायी, कक्षा–कक्ष को स्वच्छ बनाये रखने की जिम्मेदारी कक्षा मॉनीटर सहित बालसमिति को दी। इसी प्रयास के अन्तर्गत गाँव कनेक्शन फेडरेशन द्वारा स्वच्छता और स्वास्थ्य विषय पर स्वास्थ्य अधिकारियों की उपस्थिति में गांव चौपाल का आयोजन विद्यालय परिसर में किया गया।

बालकेन्द्रित माहौल बनाने का प्रयास :

▪बच्चों में सामाजिकता विकसित करने और दायित्व निर्वहन के उद्देश्य से खेल समिति, भोजन समिति, पर्यावरण समिति, पुस्तकालय समिति, सांस्कृतिक समिति, पर्यावरण समिति सहित विभिन्न बालसमितियों का गठन किया जिससे कक्षा व विद्यालय संचालन के साथ छात्रों को एक दूसरे से सीखने और सिखाने में विशेष सहयोग मिला ।

प्रेम और प्रोत्साहन से बच्चों का उत्साहवर्धक :

आज का दीपक व आज की चांदनी कांसेप्ट के साथ प्रातः सबसे पहले विद्यालय आने वाले बच्चों के नाम दैनिक श्यामपट संदेश के साथ लिखना शुरु किया जिससे बच्चों में समय से विद्यालय पहुँचने की इच्छा बढ़ी एवं नियमित विद्यालय आने वाले बच्चों को दैनिक शाब्दिक, करतल ध्वनि प्रोत्साहन के साथ माह के अन्त में अभिभावकों सहित सम्मानित करने की व्यवस्था की शुरुआत की। फलस्वरूप अधिकांश बच्चों में नियमित विद्यालय आने व अभिभावकों में पाल्यों को नियमित भेजने की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई।

▪बालिका शिक्षा पर जोर :

घर के कार्य में हाथ बँटाने वाली बालिकाओं को विद्यालय तक लाने के लिए निरन्तर अभिभावक सम्पर्क, शिक्षक–माता अभिभावकों की बैठक, महिला दिवस पर विशेष आयोजन कर शिक्षा के महत्व और महिलाओं की भागीदारी पर चर्चा एवं सतत प्रयास से आज कुल नामांकन में साठ प्रतिशत बालिकाएँ हैं। व्यवस्था बदलाव के प्रत्येक कार्य में दोनों शिक्षिका बहनों श्रीमती सुमन तिवारी एवं फरहत फातमा का पूर्ण योगदान रहा।

पुस्तकालय का उपयोग :

▪ पढ़ो भारत अभियान के अन्तर्गत करीब पांच सौ बालपुस्तकों से युक्त पुस्तकालय से प्रत्येक शनिवार एक सप्ताह के लिए बच्चों को पढ़ने हेतु पुस्तकें जारी करने से बच्चों में किताबों के प्रति रुचि बढ़ी।

समर कैम्प का आयोजन : ▪ ग्रीष्मावकाश से पूर्व के सप्ताह में समर कैम्प (गतिविधि सप्ताह) का आयोजन कर चित्रकला, सुलेख, रंगोली, पेपरक्राफ्ट, मेंहदी, क्लेआर्ट, नृत्य, गायन आदि विभिन्न गतिविधियों में बच्चों को उनकी प्रतिभा प्रदर्शन का मौका देकर सर्वांगीण विकास हेतु प्रयास किया, जिससे बच्चों में स्कूल आकर कुछ अलग करने की इच्छा बनी रहती है।

सत्र समापन पर भव्य समारोह :

▪ सत्रान्त में परीक्षाफल वितरण के साथ ही परीक्षा परिणाम, उपस्थिति व विभिन्न गतिविधियों में सहभागिता के वार्षिक मूल्यांकन के आधार पर जनप्रतिनिधि द्वारा उक्त छात्रों और अभिभावकों को पुरस्कृत करने की शुरुआत की जिससे आम जनमानस में विद्यालय की सकारात्मक छवि बनी ।

वित्तीय व्यवस्था :

▪समस्त अतिआवश्यक मूलभूत संसाधनों व रखरखाव की व्यवस्था विद्यालय विकास अनुदान एवं विद्यालय अनुरक्षण मद से की गई, जबकि बच्चों के प्रोत्साहन व पुरस्कार की व्यवस्था व्यक्तिगत रूप से की गई।

सामाजिक सहभागिता से मिला सकारात्मक परिवर्तन : ▪शुरुआत में विद्यालय प्रबंध समिति की मासिक बैठक में व्यवस्था सुधार पर योजना बनाकर उसके क्रियान्वयन करने पर जोर दिया तत्पश्चात समस्त राष्ट्रीय पर्वों, बच्चों के जन्मदिन, महत्वपूर्ण दिवसों का आयोजन स्थानीय जनप्रतिनिधियों के साथ विद्यालय प्रबंध समिति एवं अभिभावकों की उपस्थिति में करने और उनके हाथों से परिसर में पेड़–पौधे लगाने की परम्परा की शुरुआत की तथा उनके पाल्यों को उस पौधे की देखरेख, सुरक्षा और नियमित सिंचन की जिम्मेदारी देने का प्रयास किया फलस्वरूप आज खुले परिसर में एक दर्जन से अधिक पौधे एक वर्ष पूराकर अपने पूर्ण आकार लेने को हैं। स्थानीय लोगों मे धीरे धीरे विद्यालय के प्रति आदर भाव जाग जाने से आज विद्यालय परिसर में जानवरों को चराने व गन्दगी होने जैसी समस्यायें न केवल पूर्ण रूप से समाप्त हो चुकी हैं बल्कि समय–समय पर विद्यालय

को सहयोग मिलना भी प्रारंभ हो गया है।
जिसकी शुरुआत सर्वप्रथम दो कक्षाओं दो पंखे व पौधों हेतु दो ट्री गार्ड लगाकर स्वयं की इससे प्रेरित होकर स0अ0 श्रीमती सुमन तिवारी ने एक पंखा व एक ट्री गार्ड, श्री सुभाष चन्द्र –पोस्टमास्टर उपडाकघर हरचन्दपुर ने एक पंखा, श्री अनुपम गुप्ता –व्यवसायी औरैया ने एक पंखा एवं यूनाइटेड टीचर्स एशोसिएशन औरैया ने बारह जोड़ी बेंच–डेस्क, एक प्रोजेक्टर, एक वाटर प्यूरीफायर, खेल सामग्री, एक बड़ा डस्टबिन, दो ट्रीगार्ड विद्यालय को उपलब्ध कराये ।

सन्देश :

▪किसी बड़े कार्य को पूरा करने के लिए उसे हमें छोटे छोटे भागों में बाँटकर करने में आसानी होती है और सहज लक्ष्य प्राप्ति भी। जरुरत है बस हमें उसकी शुरुआत करने की।

▪उपलब्धियाँ –

◆ सामुदायिक सहभागिता से विद्यालय में फर्नीचर, वाटर प्यूरीफायर, प्रोजेक्टर, पंखे, खेल सामग्री, स्वच्छता उपकरणों सहित विभिन्न संसाधनों की उपलब्धता हुई है।

◆ 80: औसत वार्षिक छात्र उपस्थिति, सभी छात्र आधार के साथ नामांकित हैं, बच्चों के स्तर में क्रमागत सुधार।

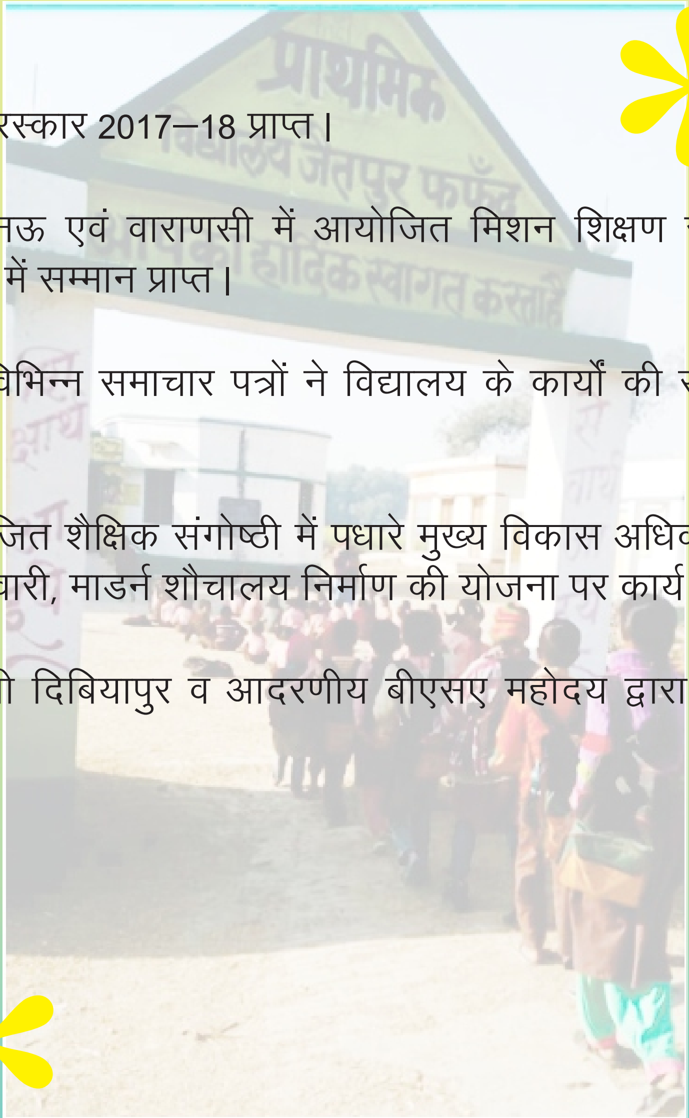

◆ स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार 2017–18 प्राप्त।

◆ कपिलवस्तु, लखनऊ एवं वाराणसी में आयोजित मिशन शिक्षण संवाद शैक्षिक गुणवत्ता सेमिनार,कार्यशालाओं में सम्मान प्राप्त।

◆ समय समय पर विभिन्न समाचार पत्रों ने विद्यालय के कार्यों की सराहना के साथ स्थान दिया।

◆ विद्यालय में आयोजित शैक्षिक संगोष्ठी में पधारे मुख्य विकास अधिकारी के निर्देश पर ग्राम पंचायत द्वारा चाहरदीवारी, माडर्न शौचालय निर्माण की योजना पर कार्य प्रारंभ।

◆ मान. विधायक जी दिबियापुर व आदरणीय बीएसए महोदय द्वारा विद्यालय व्यवस्था की प्रशंसा की गयी।

अनमोल रत्न–8

शालिनी सक्सेना (प्र.अ.)
प्रा. वि. तारापुर,
वि. ख.–बनियाखेड़ा जनपद–सम्भल।

एक लक्ष्य परिवर्तन का

हम होंगे कामयाब एक दिन

हरियाली है जहाँ। खुशहाली है वहाँ।।

मेरा नाम शालिनी सक्सेना है। हमने प्रा०वि० तारापुर, वि०ख०– बनियाखेड़ा, जनपद– सम्भल में दिनांक 24–01–2007 को प्रधानाध्यापक पद पर ज्वाइन किया।

तब स्कूल में न ही चहारदीवारी थी, न ही कोई पेड़। लेकिन धीरे धीरे विद्यालय में समर्पित होकर अपना कार्य शुरू कर दिया। इस बीच बहजोई ब्लॉक में ABRC बनने का मौका मिला और सब अध्यापकों को प्रेरित करते करते पता ही नहीं चला कि एक नवीन ऊर्जा हमारे अंदर कब आ गयी जिससे प्रेरित होकर 2015 में ''हरियाली जहाँ खुशहाली वहाँ'' कार्यक्रम का शुभारंभ एक टीम के साथ कर दिया।।

सबसे पहले अपने विद्यालय का प्रांगढ़ खूबसूरत बनाने कि शुरुवात की। अपने पास से ही बहुत सारे काम स्कूल में करवाए।

स्कूल को देखकर रोटरी क्लब सिटी स्टार द्वारा मेरे विद्यालय को गोद लिया गया। उनके द्वारा स्कूल में बहुत सहयोग किया गया फिर इनरव्हील क्लब सिटी स्टार चंदौसी द्वारा हमारे सहयोग से महिलाओं को साक्षर बनाने हेतु 15 दिवसीय कैंप लगाया गया।
शिक्षा के महत्व के बारे में बताया गया एवं जागरूकता कार्यक्रम चलाया गया उसका परिणाम यह हुआ कि आज मेरे स्कूल में 165 बच्चे नामांकित हैं।।

''करके सीखना '' Learning By Doing विधि अपनाती हूँ।
थ्योरी के साथ प्रैक्टिकल ज्ञान भी दिया गया जिसके परिणामस्वरूप हमारे स्कूल में किचेन गार्डन है जिससे तैयार सब्जियाँ रसोई में उपयोग में आती हैं।।

बच्चों के खेलने के लिए किंडर गार्डन भी है। अध्यापक, अभिभावक,छात्र एवं स्वयंसेवी संस्थानों के सहयोग से अपना विद्यालय बेहतर बनाया है।

हम कामयाब भी हो रहे हैं समय समय पर पौधरोपण के साथ साथ सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, खेलकूद प्रतियोगिता, क्राफ्ट कला, संगीत एवं ड्रम की सहायता से पी टी करवाते हैं।।
इस परिश्रम का नतीजा यह रहा कि अपने जनपद में एक पहचान तो बनायी ही प्रदेश स्तर के प्रशिक्षक(स्कूल सेफ्टी डिजास्टर मैनेजमेंट)भी हैं।।

लगातार 3 वर्ष से बेसिक बेसिक के टीचर द्वारा बेसिक के बच्चों का समर कैंप का आयोजन जनपद सम्भल में हमारे एवं हरियाली टीम द्वारा किया जा रहा है।।।

अनमोल रत्न–9

वन्दना
UPS कुआघोसी,
महरौनी, ललितपुर

बेसिक शिक्षा के बदलते रंग।
अनमोल रत्न बहनों के संग।।

आइये देखते हैं बहन वन्दना जी ललितपुर के प्रेरक और अनुकरणीय प्रयासों को:–

जब दिसम्बर 2011 में JHS कुआघोसी में ज्वाइन किया था तब भौतिक परिवेश अच्छा नही था। बाउंड्री भी नहीं थी। ग्रामीण हैंडपंप व परिसर गन्दा कर देते थे। पौधे लगाये, वह भी नहीं बच पाते थे। BEO सर के सहयोग से बाउंड्री बनवाई। जिसमें काफी मुश्किलों का सामना ग्रामीणों की ओर से करना पड़ा। बच्चों का शैक्षिक स्तर भी संतोषजनक नहीं था। बच्चों के लिए बैठने हेतु चटाई जैसी सुविधाओं का अभाव था। स्वयं ने घर से सीमेंट की बोरिया ले जाकर चटाई तैयार की। बच्चे घर से खाना खाने के बर्तन लाते थे। उनके लिए थाली व गिलास की व्यवस्था की। बच्चों के अभिभावकों से लगातार संपर्क किया व बच्चों को नियमित भेजने हेतु विनय किया।

गतिविधि आधारित शिक्षण, खेल खेल में शिक्षा, सुन्दर और स्वच्छ भौतिक परिवेश का निर्माण का प्रयास किया। इसमें ABRCs (विशेष रूप से उपाध्याय सर व तोमर सर) प्र०अ० श्री कालीचरण अहिरवार, SMC व ग्राम प्रधान श्री अनिल बरोनिया का सहयोग रहा। आनंदपुर महंत जी का विशेष सहयोग विद्यालय सुन्दरीकरण में रहा जिन्होंने समय– समय पर उपस्थित होकर मार्गदर्शन व पौधे भी उपलब्ध कराये। आज बच्चों ने राज्य स्तर तक विज्ञान मॉडल व खेल प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग किया तथा शानदार प्रदर्शन किया। बच्चे शून्य निवेश पर बेहतर क्राफ्ट व मॉडल तैयार कर रहे है। विद्यालय ने बेहतर प्रयास करते हुए उत्कृष्ट विद्यालय की सूची में स्थान प्राप्त किया। इन सभी में कई शैक्षिक ग्रुप भी शामिल है जिन्होंने बेहतर करने के लिए प्रेरित किया व आवश्यकता पड़ने पर त्वरित सहयोग दिया। Team Eduleaps से जुड़कर प्रयासों को पंख मिले। सभी साथियों के सहयोग से निरन्तर बेहतर के लिए प्रयास जारी है।

निन्दक नियरे राखिए

मिशन शिक्षण संवाद एक संघ नहीं, संगठन नहीं बल्कि एक वैचारिक क्रांति है। इस वैचारिक क्रांति के नींव में है प्रेरणा के द्वारा वांछित परिणाम की प्राप्ति, यह स्वप्रेरित स्वान्तः सुखाय के लिए तन मन धन से समर्पण को तत्पर शिक्षकों का एक ऐसा समूह है जो अपने कर्तव्यों के द्वारा न केवल विद्यालय प्रवेश बल्कि संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन करने के सपने देखता है बल्कि उन्हें साकार करने के लिए हरसंभव प्रयत्न भी करता है। जिसका परिणाम है कि पूरे प्रदेश में एक के बाद एक ऐसे स्कूलों की तथा शिक्षकों की तस्वीरें उभरकर सामने आ रही हैं जिनके कार्यों को अब तक न तो विभाग द्वारा पहचान मिली थी न ही प्रशासनिक मशीनरी द्वारा कोई ऐसा मंच मिला था जिस पर वह अपनी उपलब्धियों का प्रदर्शन कर आत्मसंतोष का अनुभव कर सकते हैं। हाँलाकि यह उन शिक्षकों के लिए मानसिक प्रताड़ना एवं अधिकारियों के कोपभाजन के हथियार के रूप में सामने आया जिसमें उनकी स्थानीय समस्याओं परिस्थितियों, असहयोग, असुरक्षा की स्थानीय समस्याओं की सुनवाई सिरे से नकारना के साथ ही एक अप्रत्याशित माँगों की फेहरिस्त सामने आने लगी। जिसमें किसी भी प्रकार, कैसे भी अपने स्वयं के पैसे, समय एवं व्यक्तिगत संपर्कों के बल पर जुटाए गए संसाधनों का प्रयोग करके स्कूलों को उसी तरह सजाने सँवारने की है जैसा कि किसी एक स्कूल ने किया है, यहाँ न कोई सुनवाई थी न कोई सहयोग था,

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की संसाधनविहीन दुर्दशा में क्रमबद्ध तरीके से आवश्यक न्यूनतम संसाधन के लिए सरकार के सामने योजनाएँ बनाकर प्रस्तुत करने एवं शिक्षकों की व्यवहारिक समस्याओं को शासन तक पहुँचाकर उनका सर्वसम्मत हल प्राप्त करने के सेतु की बजाय, सबको यह सरल रूप भा गया कि शिक्षकों द्वारा अपने वेतन से प्रतिमाह एक निश्चित अंशदान खर्च करके पंखे, इन्वर्टर, समर्सिबल पम्प, फर्नीचर एवं भौतिक परिवेश सुधारने का दबाव बनाकर यह कार्य करा लिए जाएँ, ऐसी दशा में वह शिक्षक स्वयं को पूरी तरह उपेक्षित एवं हतोत्साहित महसूस करने लगा जो अपनी व्यक्तिगत, पारिवारिक अथवा सामाजिक स्थिति के कारण या स्थानीय निवासियों ग्राम प्रधानों आदि के अनुचित व्यवहार के कारण इन अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतर पा रहे हैं। एक ओर जहाँ वर्ष 2000 के मुकाबले वर्ष 2018 तक थोक मूल्य सूचकांक में लगभग 3 गुना की वृद्धि हो चुकी है वही दूसरी ओर विद्यालय की साज– सज्जा के लिए आने वाले 5000 रूपए वहीं पर स्थित हैं वह भी तब जबकि वर्ष 2000 के दो कमरों वाले प्राथमिक विद्यालय समय के साथ 3 से 5 कमरों, रसोई, रसोई विस्तार, बालक बालिकाओं के लिए पृथक पृथक शौचालयों – मूत्रालयों एवं चहारदीवारी के भारी भरकम रूप में बदल चुके हैं। संक्षेप में कहें तो हर विद्यालय पूर्व के मुकाबले में 3 से 5 गुना बड़े परिसर में बदल चुका है इस स्थिति मे किसी के लिए यह समझना बिल्कुल भी कठिन नहीं है कि तब के 5000 रूपए जोकि वर्तमान में थोक मूल्य सूचकांक के अनुसार आज 1700 रुपए के बराबर है उनके उपयोग से 4 गुना बड़े परिसर की साज सज्जा किस तरह की आपेक्षित होनी चाहिए परंतु मिशन को इससे क्या मिशन तो स्वांतः सुखाय के सिद्धांत पर चलने वाला स्वयं समूह जिसमें शामिल सदस्य औरों की चिंता नहीं करते, न ही वे इस बात की चिंता करते हैं कि सबकी सामजिक, आर्थिक परिस्थितियाँ क्या और कैसी हैं फिर वे करे भी क्यों? उनका तो विचार स्पष्ट है – हम कर सकते हैं तो हम क्यों न करें? जो नहीं कर सकते इनसे हमें क्या? हम इनसे या अन्य किसी

से क्या ले रहे हैं? अपने पैसों से कर रहे हैं किसी को इसमें आपत्ति क्यों?

पर ऐसा कहते हुए यह भूल जाते हैं कि आज सभी जायज माँगों एवं आर्थिक आँकड़ों को सिरे से अनसुनी कर दूसरों के लिए जो अपेक्षाएँ शासन – प्रशासन पाल बैठा है उसके मूल में सिर्फ उनका यह स्वांत सुखाय है जिसको सामाजिक सहयोग के आवरण में लपेटकर बखूबी प्रस्तुत किया जाता है और उन सभी से ''समुदाय के सहयोग से'' के नाम पर यह सब करने को कहा जाता है किसी भी अध्यापक से अगर पूछा जाए कि वास्तव में उसे समुदाय से कितना सहयोग मिला है तो शायद ही कुछ जगहों को छोड़कर अन्य जगह आर्थिक सहयोग किसी सामान्य अभिभावक या ग्रामवासी से किसी स्कूल को प्राप्त हुआ हो क्योंकि यह बात किसी से छिपी नहीं या सरकारी स्कूलों में जिस समुदाय के बच्चे पढ़ने आते हैं वह समाज के सबसे निचले पायदान एवं वंचित वर्ग का है जरा सा भी सम्पन्न परिवार अपने स्कूलों अपने बच्चों को टाई बेल्ट पहना करके वैन में स्कूल भेजना अपनी शान समझता है वह अपने बच्चों को दो कमरों के, बिजली–फर्नीचर से विहीन, वंचित वर्ग के कथित रूप से गंदे बच्चों के साथ बैठे नहीं देखना चाहता।

अतः इसका क्या हल है जरूरत है मिशन के सिपाही अपने द्वारा किए गए कार्यों की फोटो में प्रदर्शित करने के साथ इस बात का लेखा जोखा भी अनिवार्य रूप से प्रस्तुत करें इस लक्ष्य को पाने के लिए उन्होंने कुल कितनी धनराशि खर्च की, जिसमें सरकारी उनसे कितना था कितना ग्राम प्रधान का, कितना अभिभावकों का, कितना शिक्षकों का एवं कितना स्वयं का था और यह स्थिति तब और दुखद हो जाती है कि इतना सबके बावजूद उसे समाज से प्रशंसा के दो शब्द हासिल नहीं होते, अपने ही सम्मान के समारोह आयोजित कराने के लिए भी स्वयं के चंदे से न केवल व्यवस्थाएँ करनी पड़तीं हैं। बल्कि इन प्रमाणपत्रों को छपवाने में आने का आने का खर्चा भी उन्हीं के अंशदान से ही पूरा किया जाता है मिशन के लक्ष्य को यदि सार्थक बनाना है तो अपने कुछ हजार खर्च करके भौतिक चमक से प्रभावित कर हर मंच पर खुद के लिए स्थान व प्रमाण पत्र सुरक्षित कर स्वान्तः सुखाय की भावना की बजाय सरकारी संसाधनों की सीमा में, सामान्य तौर पर वास्तविक रूप से प्राप्त होने वाले जन सहयोग के अंतर्गत रहते हुए बच्चों के भविष्य निर्माण के लिए ईमानदार प्रयासों को महत्व देने की कोशिश करनी होगी जो कि वर्तमान में मिशन के साथ बमुश्किल जुड़े 1% साथियों से अलग 99% साथियों में छिपी है। जब तक अंतिम साथी भी मिशन के प्रयासों को कुछ लोगों, जिनको कदाचित प्राप्त बेहतर परिस्थितियों को प्रचारित करने और महिमामंडन करने तक सीमित मानेगा, कोई भी वृहत लक्ष्य जिसमे स्वान्तः सुखाय की भावना जन हिताय की परिणति को प्राप्त कर सके, प्राप्त नहीं हो सकेगा।

शासन द्वारा दी गयी सीमित सुविधाओं में रहकर, बेहतर परिणाम और कर्तव्यनिष्ठा से शैक्षणिक गुणवत्ता को प्राप्त करने वाले गुमनाम अनमोल रत्नों को मंच प्रदान करे।

–अमरेश मिश्र

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

सरल जोड़ मशीन

TLM का नाम : सरल जोड़ मशीन

उद्देश्य : कक्षा 1 और कक्षा 2 के विद्यार्थियों को संख्याओं और जोड़ की संक्रिया को सिखाना

बनाने में प्रयुक्त सामग्री :

कार्ड बोर्ड एवं थर्माकोल (TV या रेफ्रिजरेटर के पैकिंग से प्राप्त), pvc फ्लेक्सिबल पाइप, चार्ट पेपर, ग्लेज पेपर, चिपकाने के लिए टेप, फेवीकोल, 10 pcs पेंसिल या स्टिक्स, लिखने के लिए स्केच या कलर, कंचे(गोली)...etc

निर्माण विधि :

सर्वप्रथम कार्ड बोर्ड की सहायता से एक 18''×18'' का बॉक्स बना लें जिसकी ऊँचाई लगभग 6'' होनी चाहिए। चित्र के अनुसार दोनों किनारों पर अंदर की ओर ढालनुमा बना लें। अब थर्मोकोल में समान दूरी पर 10 छिद्र बना लें और उसमे pvc पाइप इस तरह से फिट करें कि उसका प्रथम सिरा ऊपर की ओर और दूसरा शिरा ढालनुमा चैम्बर में आकर खुले। ध्यान रहे चैम्बर में पहुंचने वाले सिरे के मुहाने के ठीक पहले पेंसिल या स्टिक्स को इस तरह से सेट करेंगे कि वह प्रत्येक सिरे के लिए स्टॉपर का कार्य करे। अब इस थर्मोकोल को कार्डबोर्ड के बॉक्स के ऊपर चित्रानुसार रखेंगे और टेप की सहायता से थर्मोकोल और बॉक्स को फिक्स कर देंगे।

ढाल नुमा चैम्बर वाले भाग में सामने की ओर से नीचे कि तरफ एक ट्रे लगाने के लिए बॉक्स की दीवार को चित्रानुसार काट लेंगे और उसमें किसी भी कार्डबोर्ड के डिब्बे (मोबाइल या मिठाई का डिब्बा) का ढक्कन वाला भाग लगा देंगे। इसके बाद चार्ट पेपर और ग्लेज पेपर की सहायता से इसके बाह्य आवरण को फेविकोल की सहायता से चिपकाकर स्केच या रंगों की सहायता से सुंदर और आकर्षक बनाएंगे। ग्लेज पेपर को झंडी,गुब्बारे या अन्य किसी उपयुक्त आकृति में काट कर उस पर रंगों से 1 से 10 तक की संख्याओं को लिख कर पेंसिल या स्टिक्स पर चित्रानुसार चिपका देंगे।

प्रयोग विधि :

सरल जोड़ मशीन में जोड़ की संक्रिया को सिखाने के लिए हम अपनी कक्षा के किसी भी विद्यार्थी को बुलाएंगे और प्रश्नानुसार जिन दो संख्याओं को जोड़ना है, उस अंक से संबंधित झण्डी को हल्का सा ऊपर उठाएंगे, ऊपर उठाते ही उस नम्बर वाली पाइप में पूर्व से भरे हुए कंचे ढालनुमा चैम्बर से होते हुए सीधे ट्रे में आ जाएंगे, इसी तरह से दूसरे अंक वाली झण्डी भी हल्का सा ऊपर उठाने पर उपरोक्त प्रक्रियानुसार ट्रे में कंचे आ जाएंगे। अब ट्रे को बाहर की ओर खींचकर हम विद्यार्थी को ट्रे में आये कुल कंचों को उठाकर गिनने के लिए कहेंगे,गणना के पश्चात हम बच्चे को बताएंगे कि प्रश्नानुसार जिन दो अंको को जोड़ना था,उन दोनों को एक साथ मिलने या जोड़ने पर अमुक संख्या प्राप्त होती है।

साभार
प्रभात कुमार(पॉजिटिव) (स0अ0)
प्रा0वि0 महावां,वि0ख0 सरसवां,
जनपद–कौशाम्बी

आरोही–अवरोही क्रम

TLM का नाम–आरोही, अवरोही क्रम
कक्षा – 4
विषय– गणित
पाठ का नाम– संख्याओं की तुलना
उद्देश्य– आरोही,अवरोही की अवधारणा को व्यावहारिक प्रयोगों के द्वारा सपष्ट करना
सहायक सामग्री –थर्माकोल गत्ता ,कलर पेपर, पारदर्शी प्लास्टिक शीट, डॉल, फेविकोल, मार्कर आदि।

निर्माण विधि – 8•29 इंच की थर्माकोल सीट पर 8•26, 8•23, 8•20 की सीट को फेविकोल से चिपकाकर चढ़ती, उतरती सीढ़ियों का मॉडल बनाकर सभी सीढ़ियों पर कलर पेपर चिपकाने के बाद उन पर 1 से 10चढ़ते व उतरते हुए 9 से 1 तक अंक लिख लेते है।

क्रियाविधि –खिलौने या गुड़िया को चढ़ाकर व उतार कर व बिल्डिंग लिफ्ट मॉडल मे भी डॉल के ऊपर नीचे जाने पर उसके फ्लोर का नंबर घटता–बढ़ता दिखाई देता है।

बच्चो को लाभ –बच्चे fun के साथ व्याहारिक तरीके से कॉन्सेप्ट को समझेंगे।

साभार:
श्री जे0पी0
(स0अ0)
प्रा0वि0सुरौली खुर्द ,सुमेरपुर हमीरपुर

Beauty and aim of poem in primary classes

1)The first and the utmost moto of poem is to break the monotony of class and studies.

Make the class more lively, happening and relaxing.

2) Read the poem aloud over the public address.

3) Ask the students to memorize.

Recite the poem in the class in a song form ie in a melodies way with different gestures and actions.

5) Reading, reciting and singing poem allows me to see into a deeper and the emotional part of children.

Finally rectify and beautify the errors of students in a gentle ,calm and loving manner

Yogita Hemker

PS SULTANAPUR

BLOCK Bhadohi

Dist Bhadohi

शिक्षण गतिविधि

साँप–सीढ़ी (गतिविधि आधारित शिक्षण कार्य)

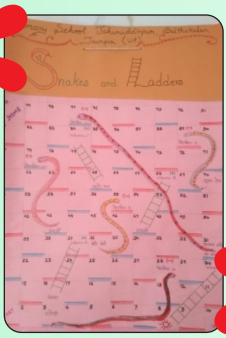

साँप सीढ़ी एक ऐसा रोचक खेल है जिसे लगभग सभी बच्चे खेलना पसन्द करते हैं। साथ ही न्यूनतम लागत और अनेकों शिक्षण गतिविधियों के साथ इसे प्रस्तुत किया जा सकता है। साँप सीढ़ी इनडोर गेम होने के कारण क्लास के अंदर भी आसानी से खिलाया जा सकता है और ज्यादा से ज्यादा बच्चों को शामिल किया जा सकता है।

तो आइए जानते हैं इस बहुउद्देश्यीय गतिविधि को कैसे कक्षा के लिए उपयोगी बनाया जा सकता है और छात्र–छात्राओं के साथ विद्यालय के शिक्षक शिक्षिकाओं के लिए कितना उपयोगी है।

आवश्यक सामग्रीः (१) वर्गाकार दफ्ती (२) दफ्ती के नाप का चार्ट पेपर (३) फेविकॉल/गोंद (४) कैंची (५) स्केल (६) पेंसिल व रंगीन स्केच (७) पासा–गोटी

निर्माण विधि :– सर्वप्रथम दफ्ती को वर्गाकार आकृति में काट लेते है दफ्ती के ऊपर चार्ट पेपर फेविकॉल अथवा गोंद के माध्यम से चिपकाकर उसे सूखने तक किसी वजन वाली चीज में दबाकर रख देते हैं। सूखने के उपरांत बराबर की 10–10 रेखाएँ (बाएँ से दाएँ और ऊपर से नींचे) खींच लेते हैं। अब इनमें स्केच की मदद से नीचे से बाएँ से प्रारंभ करते हुए आरोही क्रम से 1 –100 तक की गिनती खानों में लिख लेते हैं। इसके बाद विषय वस्तु के आधार पर कुछ साँप जो आवश्यकता अनुसार छोटे व बड़े हों की भांति ही सीढ़ियों को इन वर्गखानों में बना देते हैं। अब आपकी साँप–सीढ़ी खेल खेलने के लिए तैयार है।

अधिगमः (१) इस खेल के माध्यम से छात्र छात्राएँ उपयोगी व घातक चीजों को खेल–खेल में समझ सकेंगे।
(२) विशेषकर विज्ञान और गृह विज्ञान की अवधारणाओं को रुचिपूर्वक ढंग से सीखेंगे।

खेल की उपयोगिता : इस खेल से 3 से 8 तक के बच्चे जहाँ खेल–खेल में सीख सकते हैं वहीं विद्यालय में जिस दिन शिक्षकों की कमी हो उस दिन 1 कक्षा को इस खेल के माध्यम से शांत रखा जा सकता है। खेल के साथ शिक्षा इस खेल की मुख्य विशेषता है।

इस खेल को और अच्छे से जानने के लिए प्राथमिक विद्यालय जहुरूद्दीनपुर जनपद जौनपुर की इस विडिओ को कृपया यूट्यूब की इस लिंक को जरूर देखें।

https://youtu.be/AKRq6hWmqV0

शिवम सिंह (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय जहुरूद्दीनपुर
जनपद : जौनपुर

नवाचार

मैं बिधु सिंह स०अ०
प्राथमिक विद्यालय गढ़ी चौखंडी
बिसरख 1 गौतमबुद्ध नगर
में 26.09.2012 से कार्यरत हूँ।

मेरे द्वारा विद्यालय में किया जा रहा शिक्षण संबंधी नवाचारी आईडिया

मैं विद्यालय में बच्चों को किस किस विधि से पढ़ाती हूँ, निम्नवत है–

1.परिवेश पर आधारित शिक्षण :–

बच्चे परिवेशीय शिक्षण में रुचि लेते है। मैं परिवेश पर आधारित प्रश्न पूछती हूँ , बच्चे आसानी से उत्तर देते हैं। मैं कोई भी टॉपिक दे देती हूँ जैसे Shape (आकृतियाँ)। बच्चे अपने आस–पास की वस्तुओं को देखकर यह बता देते है कि यह कौन सी आकृति है। इसी तरह अलग–अलग विषयों में बच्चे आसानी से समझ जाते हैं। परिवेशी शिक्षण विधि में बच्चे उत्साह और मन लगाकर हिस्सेदारी लेते है।

2.सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता के माध्यम से:–

मैं कभी–कभी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता करवाती हूँ जिसमें बच्चों से सामान्य ज्ञान के प्रश्न पूछती हूँ। जो बच्चा सबसे ज्यादा सही उत्तर दे देता है उनमें से प्रथम , द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को गिफ्ट देकर सम्मानित करती हूँ और अच्छे से अध्ययन में रुचि के लिए ताली बजवाती हूँ। मेरे द्वारा चलाई जा रही सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का नाम ''कौन बनेगा स्टार'' है। बच्चे बहुत ही हर्षोल्लास के साथ इस प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते हैं।

3.TLM के माध्यम से:–

Teaching Learning Material के माध्यम से मैं कोई भी विषय बच्चों को आसानी से समझा लेती हूँ। सभी विषयों के विद्यालय में मेरे द्वारा TLM बनाये गये हैं।

4.Story (कहानी) के माध्यम से:–

मैं बच्चों को कहानी के माध्यम से शिक्षण करवाती हूँ। मैं बच्चों को सविस्तार में कहानी की तरह किसी भी Topic को समझती हूँ, बच्चे आसानी से समझ जाते हैं। मैं श्यामपट्ट पर चित्र बनाकर बच्चों को कहानी लिखने के लिए देती हूँ। बच्चे उसका शीर्षक और कहानी लिखते हैं। इस विधि द्वारा बच्चों में स्वलेखन क्षमता का विकास होता है। बच्चे शुद्ध लिखना व बोलना आसानी से सीख जाते हैं। स्वलेखन विधि द्वारा बच्चों को मात्राओं का सही सही ज्ञान हो जाता है। इस विधि द्वारा बच्चे कहानी लिखना सीख गए हैं। इस विधि द्वारा बच्चों में स्वलेखन की क्षमता का विकास हुआ है।

5.Activity (गतिविधि) के माध्यम से:–

मैं हमेशा विद्यालय में एक्टिविटी करवाती रहती हूँ। English subject में words, poem और गणित में अंकों का ज्ञान आसानी से करा देती हूँ। बच्चे गतिविधियों के माध्यम से पढ़ना ज्यादा पसंद करते हैं।

उपर्युक्त गतिविधियों का प्रयोग कर बच्चे लिखित तथा मौखिक प्रकरण को सरलता से समझकर याद कर ले रहे हैं। इन सब विधियों का प्रयोग करके बच्चों में अभिव्यक्ति की क्षमता, स्वाध्याय, स्वलेखन तथा अधिगम में सकारात्मक वृद्धि हुई है। बच्चों में एक नवीन परिवर्तन दिख रहा है तथा शिक्षण के प्रति कर्तव्यनिष्ठा का भाव एवं रुचि स्पष्ट दिख रही है।

बुद्ध

ऐसा नक्षत्र जिस पर स्वयं का प्रकाश है। उधार का कुछ नहीं है।
एक ऐसा व्यक्तित्व जो किसी मार्ग के अनुकरण से नहीं बना, खुद की खोज से बना।
जिन्होंने अपने अनुयायियों को भी अपने पीछे चलने की बजाय स्वयं–प्रकाश बनने को कहा।
जिनकी वाणी में किताबी बौद्धिकता नहीं, अपितु खुद के जीवंत अनुभवों का निचोड़ है।
जिनकी उपस्थिति उपदेशों से अधिक मूल्यवान थी।

जिनके जीवन में त्याग, वैराग्य, अनासक्ति, सादगी और करुणा उपदेशों से भी अधिक मूर्तिमान रहे।
जिनकी सीमित वाणी में आप्तता की वह शक्ति निहित है जो साधना की पराकाष्ठा होने पर ही आती है।
जिन्होंने जनकल्याण के लिए अपने निर्वाण–रूपी परमपद–प्राप्ति को भी स्थगित कर दिया।
बुद्ध का मार्ग सिर्फ संन्यासियों के लिए ही प्रकाश–स्तम्भ का कार्य नहीं करता, बल्कि हर वह व्यक्ति जो अपने कार्यक्षेत्र में सर्वोत्तम देना चाहता है, उसे बुद्ध से बहुत कुछ प्राप्त होता है।
1. अपमानित होने पर भी अविचलित रहकर सामने वाले को गलती का सहज बोध कराना।
2. अंगुलिमाल जैसे दुर्दांत डाकू के आगे 'निर्भय' होकर जाना और अपनी 'शांतचित्त' 'सौम्य वाणी' से उसका कायाकल्प कर देना।
3. कोई भी किताबी आदर्श उपस्थित न होने के बावजूद 'अपना रास्ता खुद खोजना' और किसी के भी साथ न देने पर भी उस रास्ते पर 'अकेले दम पर दृढ़तापूर्वक चलना'।

ज्ञान तो प्रायः सभी को है, ढेर सारा है किंतु वह प्रायः केवल बुद्धि तक ही सीमित रह जाता है, उल्टे अहंकार का कारण बन जाता है लेकिन बुद्ध का ज्ञान हृदय तक उतरा, उनके आचरण में दिखा, उनकी वाणी में ओज बनकर फूटा।

इसीलिए शुष्क किताबी उपदेशक जहाँ जुगनू की भाँति निष्प्रभावी रह जाते हैं वहीं बुद्ध जैसे 'स्वयंप्रकाश सूर्य' सहस्रों वर्षों के बाद भी लोगों को
ज्ञान का प्रकाश पहुंचाते हैं,
सार्थक जीवन का मार्ग सुझाते हैं,
सत्य का बोध कराते हैं
यही नहीं,
अवतारवाद के विरोधी होने के बावजूद अपने उदात्त और अपूर्व व्यक्तित्व के बल पर अवतार मान लिए जाते हैं।
बुद्ध का अनुयायी नहीं बनना है।
उनके प्रकाश में हमें अपना–अपना बुद्धत्व प्राप्त करना है।

प्रशान्त अग्रवाल
सहायक अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय डहिया
फतेहगंज पश्चिमी
बरेली

बाल फिल्म

करामाती कोट

बच्चों के जीवन में फिल्मों का भी बहुत महत्त्व होता है। यह वह दृश्य–श्रव्य साहित्य है जिससे बच्चे बहुत कुछ सीखते हैं। इसलिए बच्चों के स्वस्थ मनोरंजन के लिए बाल फिल्म अवश्य दिखानी चाहिए। आज के दौर में जब बच्चे स्मार्टफोन और लैपटॉप के साये में समय से पहले बड़े हो रहे हैं तब तो मासूमियत भरी बाल फिल्मों का महत्त्व और बढ़ जाता है। यद्यपि भारत में बाल साहित्य लिखना और बाल फिल्में बनाना एक आर्थिक जोखिम होता है लेकिन समय–समय पर कई प्रतिभाशाली लोगों ने इस जोखिम को उठाया है और सफलता के झंडे गाड़े हैं।

आज हम आपका परिचय 1993 में बनी ऐसी बाल फिल्म से करा रहे हैं जो कभी पुरानी हो ही नहीं सकती–करामाती कोट। करामाती कोट में राजू नाम का एक लड़का अपनी बहन और जीजा के साथ रहता है। उसका जीजा राजू को निकम्मा समझता है और अक्सर मारता रहता है। एक दिन इसी मार से त्रस्त होकर राजू घर से भाग जाता है। उस रात राजू को एक नीले बालों वाली बुढ़िया मिलती है। राजू ने सुन रखा है कि नीले बालों वाली बुढ़िया किसी को कोई भी वरदान दे सकती है। राजू भी उससे कुछ माँगना चाहता है लेकिन बुढ़िया उससे कह देती है कि वो तो स्वयं फकीर है, वो किसी को क्या दे पाएगी। निराश और भूखा राजू बेंच पर सो जाता है। उसे ठिठुरता देख नीले बालों वाली बुढ़िया एक लाल कोट से उसे ढाँककर चली जाती है।

अगले दिन सुबह जब राजू उठता है तो वही कोट पहनकर चल देता है। एक घटना से उसे अचानक पता चलता है कि वो लाल कोट जादुई है उसमें जब भी हाथ डालो तो एक रुपया निकलता है। अब तो राजू की मौज हो जाती है। वो जो चाहें वो खरीद सकता है। वो अपने लिए कपड़े खरीदता है, मनचाहा खाना–खिलौने खरीदता है। घटनाओं के क्रम में ये बात तीन चोरों को पता चल जाती है और वो उससे कोट छीनकर राजू को भगा देते हैं। लेकिन जब कोट राजू से दूर हो जाता है तब उसमें से एक भी रुपया नहीं निकलता। चोर उस कोट को बेकार समझकर फेंक देते हैं। कोट बहता हुआ राजू के पास पहुँच जाता है।

ये फिल्म हिन्दी के अतिरिक्त तमिल, कन्नड़, मलयालम, तेलुगु आदि भाषाओं में भी प्रदर्शित हो चुकी है। मनोरंजक होने के साथ–साथ ये फिल्म शिक्षाप्रद भी है जो सिखाती है कि लालच किसी का कभी पूरा नहीं हो सकता। फंतासी भरी इस फिल्म को किसी अवसर पर अपने विद्यालय में अवश्य दिखाएँ।

बच्चों का कोना

कपड़े के थैले ने कागज के लिफाफे को पास बुलाया
पास बुलाकर उसको अपनी खुशी का राज बताया
अब तो चारों ओर बजेगी हमारी बीन
सुना तुमने बंद हो गयी है पॉलीथीन
यह सुनकर कागज का लिफाफा मुस्कुराया
उसने अपने दिल का हाल इस तरह फरमाया
बंद हो चुकी है पहले भी बहुत सी चीजें
जैसे गुटका, तम्बाकू और नशीली चीजें
लेकिन लोगों पर कोई बंद असर कहा करता
आज का मनुष्य नहीं किसी से डरता
हमको साथ ले जाने में सबको शर्म है आती
रंगबिरंगी पॉलीथीन सबके मन को भाती
न परवाह है किसी की न किसी का डर
चाहे पॉलीथीन के प्रयोग से हो जाए कैंसर
यदि मनुष्य स्वच्छ पर्यावरण व अच्छा स्वास्थ्य चाहता
तो इतनी अधिक पॉलीथीन कभी नहीं अपनाता
पॉलीथीन धरती की उर्वरता को है घटाती
और पानी को भी यह जहरीला है बनाती
इसको खाने से पशुओं की जान चली है जाती
और हवा में भी यह दूषित तत्वों को फैलाती
अब तो बच्चा–बच्चा देश का करता यही पुकार
पॉलीथीन को देश से जल्द कर दो बाहर
हमें नहीं चाहिए प्लास्टिक के पैकेट और खिलौने
अपने लकड़ी और मिट्टी के खिलौने बड़े सलौने

मोनिका सिंह,
उच्च प्राथमिक विद्यालय
मिठनापुर, शाहाबाद (हरदोई)

किशमिश की बारात

किशमिश की बारात है आई,
बंटे बतासे और मिठाई।
नारियल की कार में आये,
काजू राजा बहुत शरमाये।
जामुन, बेरी और अंगूर,
नाच नाच हुए थक के चूर।
पिस्ता ,चिरौंजी संग ले आये,
किशमिश को दुल्हन सा सजाये।
किशमिश ने डाली वरमाला
दूल्हे का था रूप निराला।
आई फिर खाने की बारी,
लड्डू ,पूरी और तरकारी।
केसर, बादाम की थी ठंडाई,
केले, आम ने मौज उड़ाई।
आड़ू, कीवी, कटहल गाते,
थक गए खाते ,ढोल बजाते।
अंजीर दुल्हन को ले जाते,
खरबूजे फूले नही समाते।
मजा आ गया सारी रात
फल मेवों की देख बारात।

गीता गुप्ता मन
सहायक शिक्षिका
प्राथमिक विद्यालय मढ़िया फकीरन
हरदोई

बच्चों का कोना

पानी बचाने की कहानी पशु पक्षियों की जुबानी

एक दिन अचानक चुहिया रानी के आँगन में लगे हैंडपम्प में पानी आना बन्द हो गया। चुहिया रानी ने सोचा चलो सरकारी नल से ही पानी भर लाया जाए। चुहिया रानी ने मटका उठाया और चल पड़ी पानी भरने के लिए। वहाँ पहुँची तो देखा लम्बी लाइन लगी थी। लाइन में लगने से पहले बिल्ली मौसी मिल गयी। दोनों ने सोचा चलो दूसरे हैंडपम्प पर चलते हैं। वहाँ जा के देखा तो वहॉं भी सूखा पड़ा था। दोनों वापस सरकारी हैंडपम्प पर आयीं तो देखा वहाँ अब भी लम्बी लाइन लगी हुई थी। इतनी देर में मुश्किल से एक दो बाल्टी पानी ही निकला था। सभी परेशान कि आखिर क्या किया जाए? कहाँ से आएगा पानी? पानी के बिना कैसे जिएँगे अब?

तब एक गिलहरी पेड़ से नीचे उतरकर आयी और बोली कि पास में ही एक कुआँ है चलो वहीं चलते हैं। सभी लोगों ने अपने अपने बर्तन उठाये और कुएँ की ओर चल पड़े। सभी बड़ी उम्मीद के साथ वहाँ पँहुचे तो देखा कि कुआँ कचड़े से भरा हुआ था। उसमें पानी तो था लेकिन कचड़े के नीचे बहुत गहराई में। तब खरगोश दादा बोले–सोचते क्या हो जीना चाहते हो तो मेहनत करो। सभी मिलकर कुएँ का कचड़ा बाहर निकालो और कुएँ की सफाई करो। इसके अलावा और कोई चारा नहीं है।

फिर क्या था। पानी सभी की जरूरत थी। तो सब लोग लग गए कुएँ की सफाई करने में। दिन भर के अथक प्रयास के बाद कुएँ का पूरा कचड़ा साफ हो गया और पानी चमचमाने लगा। सभी लोग खुशी से उछल पड़े और राहत की साँस ली।

उसी समय सभी जन्तुओं ने आपस में सलाह की और निश्चय किया कि अब हम पानी बर्बाद नहीं करेंगे और बरसात के बाद हैंडपम्प में पानी आ जाने के बाद भी कुएँ की उपेक्षा नहीं करेंगे। ताकि भविष्य में हमें सूखे की स्थिति से न जूझना पड़े। कल की सुरक्षा के उपाय हमें आज से ही करने होंगे। तभी हमारा और हमारे देश का कल सुरक्षित हो पाएगा।।

लेखिका
जमीला खातून,
प्रधानाध्यापक,
बेसिक प्राथमिक पाठशाला गढधुरिया गंज,
नगर क्षेत्र मऊरानीपुर,
जनपद–झाँसी।

शीर्षासन

मास्टर सहीराम एकल विद्यालय के एक कर्मठ अध्यापक हैं। एकल अध्यापक होने के बाद भी वो बच्चों को पढ़ाने का कोई मौका नहीं चूकते हैं। मौका इसलिए कहा क्योंकि विभागीय सूचनाओं में दबे अध्यापक के लिए मुश्किल होता है बच्चों को पढ़ाने के लिए समय निकालना और यदि विद्यालय एकल हो तब तो सूचनाओं और पढ़ाई के बीच साँप–नेवले का खेल होता है। ऊपर से रसोइया का बार–बार आवाज देना तो नल पर भैंस को पानी पीने से रोकने के लिए मास्टरजी का कक्षा से बाहर भागना तो कभी अभिभावकों की बतकही सुनना। ऐसे में शिक्षक को पढ़ाने के मौके ही ढूँढने पड़ते हैं।

मास्टर सहीराम को इन विषम परिस्थितियों में भी काम करने में कोई परेशानी नहीं थी। वो बरसों से अपने कर्तव्यों का पूर्ण निष्ठा से पालन करते थे। लेकिन कभी–कभी खीझ जाते थे कि कहाँ फँस गया। ऐसे में ही उनके जीवन में स्मार्टफोन का पदार्पण हुआ जिसने व्हाट्सएप्प और फेसबुक जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के पट खोल दिए। यहाँ आकर मास्टर सहीराम को महसूस हुआ कि उनसे भी बदतर परिस्थितियों में कई शिक्षक जी रहे हैं। मास्टर सहीराम ने अपने मोबाइल की रिंगटोन भी 'इस दुनिया में कितना गम है, मेरा गम कितना कम है' लगा ली थी। विद्यालय के बाद उनका समय अपने जैसे कर्मठ अध्यापकों की ऑनलाइन संगत में बीतने लगा। जहाँ वो बहुत कुछ सीखते थे और सिखाते भी थे।

मास्टर सहीराम के सम्पर्क में एक ऐसा समूह भी आया जिसका कार्य ही मास्टर सहीराम जैसे अनेकों शिक्षकों को एकसाथ लाकर खड़ा करना था। इस समूह का उद्देश्य शिक्षकों के खोए हुए सम्मान को वापिस प्राप्त करना था। निःस्वार्थ भाव से बने इस समूह को कई बार आंतरिक विरोध का विष पीना पड़ता था कई बार बाहरी आलोचनाओं का कड़वा घूँट। लेकिन शिक्षकों के सम्मान के प्रति एक निःस्वार्थ जंग जारी थी। मास्टर सहीराम की निष्काम भावना को देखते हुए उन्हें कुछ उत्तरदायित्व भी सौंपे गये। ये उत्तरदायित्व पूरे करना मानो अंगारों पर चलना था लेकिन बस यहीं से मास्टर सहीराम से जलने वाले बढ़ने लगे। लोगों को लगने लगा कि मानो मास्टर सहीराम को ताज दे दिया गया हो। सबसे अधिक चिढ़न हुई मास्टर होशियार सिंह को। मास्टर होशियार सिंह के मन में मास्टर सहीराम के प्रति कटुता उत्पन्न हो गयी। वो कैसे भी मास्टर सहीराम को गिराने की सोचने लगे। जिस प्रकार अकबर ने महाराणा प्रताप के भाई शक्ति सिंह को बरगलाकर महाराणा के विरुद्ध खड़ा कर दिया था बस ऐसे ही एक स्वार्थी समूह ने मास्टर होशियार सिंह को मास्टर सहीराम के विरुद्ध क्रांति मचाने को कहा। इसके बदले मास्टर होशियार सिंह को मिला प्लास्टिक वाले फूलों को ताज जिसकी सुंदरता नकली थी और सुगन्ध नदारद। परन्तु मन में ईर्ष्या के लिए सोफा बिछाए बैठे मास्टर होशियार सिंह के लिए ये ही किसी अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार से कम नहीं था। झूठी प्रशंसा की नींव पर मास्टर होशियार सिंह और उनके साथियों का दोहन होता रहा। लेकिन वो उसे समझ न सके। मास्टर सहीराम और मास्टर होशियार सिंह अपने–अपने मार्ग पर चलते रहे।

स्वार्थी समूह ने 'नाम हमारा, काम तुम्हारा' की तर्ज पर धीरे–धीरे मास्टर होशियार सिंह को अपने हाथ की कठपुतली बना लिया। एक दिन वो भी आया जब उस स्वार्थी समूह ने राजा न्याय कुमार के आगे मास्टर होशियार सिंह व उनके साथियों की समस्त उपलब्धियों को अपना बताना आरम्भ कर दिया और मास्टर होशियार सिंह सहित समस्त मास्टर जाति की उपयोगिता पर ही सवाल उठा दिया। इस व्यवहार से आहत व स्वयं का अस्तित्व बनाये रखने के लिए होशियार सिंह ने अपने सदकार्यों की कई दलीलें रखीं लेकिन स्वार्थी समूह के साक्ष्यों के आगे मास्टर होशियार सिंह की एक भी दलील न चली। स्वार्थी समूह ने राजा न्याय कुमार से समस्त मास्टर जाति को सूली पर चढ़ाने व अपने समूह के छदम्मीलालों के हाथों में शिक्षा प्रणाली देने का निवेदन किया। राजा न्याय कुमार इस सम्बंध में गलत निर्णय करने ही वाले थे कि उनके मंत्री विवेकलाल ने रोका और मास्टर सहीराम व उनके साथियों के शैक्षिक प्रयासों को राजा के सामने रखा।

राजा को समझ आ गया कि वो समस्त मास्टर जाति के साथ कितना बड़ा अन्याय करने जा रहे थे। आज मास्टर होशियार सिंह को भी समझ आ रहा था कि उनकी पदलोलुपता और झूठी शान की महत्वाकांक्षा समस्त मास्टर जाति का विनाश करने वाली थी। मास्टर सहीराम के बार–बार समझाने पर भी न समझना कितनी बड़ी नादानी थी। सही मार्ग पर आ चुके मास्टर होशियार सिंह को मास्टर सहीराम ने गले लगा लिया था। पश्चाताप की अश्रुधारा ने आत्मग्लानि की अग्नि में जल रहे मास्टर होशियार सिंह को ठण्डक दे दी थी।

प्रान्जल सक्सेना

Strategy : Preparing to study

As we all are aware that the concept of English medium government school is very new to the rural children so it's necessary to be well known about the goals and our future prospectives, so that we can easily achieve the desired outcomes with little efforts ...

Now the question raises "how the things will work ??

Few techniques here given below :

Talking to each other about how they teach and the results they get.

Learning from each other and following each other's work.

Designing lessons, assessments or units together.

Sharing critique lessons, assessments or units with each other.

Sharing articles and other professional resources, read and discuss books.

Working together to examine student work samples and assessments in order to better understand student strengths and weaknesses and improve instruction and other aspects of learning.

Providing moral support and encouragement to each other in trying new ideas.

Above all we have to work on creating favourable environment for kids at school and on providing proper exposure to them via activities.

We must keep in mind that earlier we were teaching English as a subject but now we have to take it as a medium of instruction too as well as a language . So, joyful learning should be promoted at the same time. As the English language unknown to students seems boring they don't want to be involved with that .

While working in this direction I felt **Role play** is an interesting way of teaching.

Some pictures of my students attached hereby playing role of fruits.
They expressed themselves as a fruit and spoke out 3 to 5 lines about them.

Chhavi Agrawal,
Primary School Banpurwan,
District-Varanasi.

माह का मिशन

स्वयं रंगें, बनाएँ तिरंगे अभियान

चलो 15 अगस्त मनायें ...

मिशन शिक्षण संवाद के सभी साथियों से निवेदन है कि अपने विद्यालयों में स्वतंत्रता दिवस हर्षोल्लास के साथ मनायें।

बच्चों से 2 दिन पूर्व ही कागज के झंडे बनवाएं और उन्हें पॉलिथीन से बने झंडे का उपयोग करने से रोकें। पॉलिथीन से होने वाली हानियों से अवगत करायें। उन्हें बतायें कि पॉलीथीन पर्यावरण के लिए कितना नुकसानदायक है, यदि कोई पशु गलती से भी खा ले तो उसकी जान भी जा सकती है। हालांकि पॉलीथीन बहुत ही सुविधाजनक और सुंदर लगती है। परंतु इससे होने वाले नुकसान को देखते हुए हमें बच्चों से लेकर अभिभावकों तक सबको सचेत करना होगा। पॉलिथीन का उपयोग कम से कम करें इस तरह स्वतंत्रता दिवस पर पॉलिथीन का उपयोग न करने की कसम खायें और बच्चों से भी झंडे कागज के झंडे बनवायें। इस तरह बच्चों में झंडे बनाने से देशप्रेम की भावना भी जागृत होगी उन्हें झंडे का महत्व बतायें, क्योंकि किसी भी राष्ट्रीय पर्व को मनाने के बाद बहुतेरे झंडों को पैर से कुचलते हुए देखा जाता है। उन्हें अवगत करायें कि झंडे का महत्व क्या है, झंडे का मान क्या है, झंडे बनवाने के साथ उसके तीनों रंगों का अर्थ केसरिया त्याग के लिए, सफेद शांति के लिए एवं हरा समृद्धि का प्रतीक होता है। झंडे में अशोक चक्र की 24 तीलियों का क्या अर्थ है? उन्हें समझायें। इस तरह उन्हें हम देश से जोड़ पाएँगे। उनके अंदर देशप्रेम की भावना को जागृत कर पाएँगे क्योंकि हमारा भविष्य ये बच्चे ही हैं यही हमारे विचारों को आगे ले जाएँगे। जिस प्रकार स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने प्राणों की आहुति देकर देश को आजाद कराया। उसी तरह इन बच्चों के अंदर भी देशभक्ति की भावना को हमें कूट–कूट कर भरना होगा। आइए आजादी के इस पर्व को हर्षोल्लासपूर्वक मनायें।

कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय–मेरी दृष्टि में

आज भारत स्वतंत्र सर्वप्रभुत्व सम्पन्न लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में संसार के मानचित्र पर अपना स्वरूप स्थापित कर चुका है। लोकतंत्र भारत की आत्मा है। यह एक जीवन शैली है, जिससे हमारे जीवन के विविध क्षेत्र प्रभावित होते हैं। हमारा संविधान हमारे सर्वांगीण विकास के लिए उन्नयन की प्रेरणा देता है।

हमारे देश की आधी आबादी जो नारियों की शक्ल में है, आज भी शिक्षा से वंचित हैं। इसी पवित्र उद्देश्य की सम्पूर्ति के लिए बालिका शिक्षा में अत्याधिक सजगता बरती जा रही है इसलिये ही कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों की स्थापना को नारी शिक्षा के हित में स्वीकारा गया है।

कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय परिचय–

बालिकाओं की शिक्षा–दीक्षा के लिए उत्तर प्रदेश में 746 विद्यालय संचालित हैं जिनमें 10 से 14 वर्ष तक की आयु की बालिकाओं को निःशुल्क आवासीय सुविधाएँ दी जाती हैं।

विभिन्न गतिविधियाँ–

इन विद्यालयों में चलने वाली शैक्षिक गतिविधियों के मूल में बालिकाएँ तो हैं हीं साथ ही उनके इर्दगिर्द जीवन के सम्पूर्ण क्षेत्र भ्रमण कर रहे हैं। इन विद्यालयों की शैक्षिक गतिविधियाँ समाज से जुड़ी स्वस्थ जनतांत्रिक नागरिक तैयार करने, राष्ट्रीय मूल्यों को आत्मसात करने, जीवन को आत्मनिर्भर बनाने, सामाजिक अनुकूलन स्थापित करने, चारित्रिक विकास करने, स्वस्थ जीवन और दृष्टिकोण को स्वस्थ बनाने की भावना पर आधारित है।

शैक्षिक गतिविधियाँ–

इस गतिविधि के अंतर्गत प्रत्येक विषय से सम्बद्ध पुस्तकीय व प्रयोगात्मक ज्ञान, उचित कक्षा सामग्री, चित्रों, चार्टों व वीडियो आदि के द्वारा प्रदान किया जाता है। जनपद के सामाजिक, शैक्षिक व बुद्धिजीवियों के द्वारा समय–समय पर परखा भी जाता है।

स्वास्थ्य सम्वर्धन सम्बन्धी गतिविधि–

'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन निवास करता है' इस उक्ति के आलोक में विद्यालय में स्वास्थ्य सम्बन्धी गतिविधियों का संचालन किया जाता है। बालिकाओं के स्वास्थ्य सम्बन्धी जाँच व परामर्श के लिए प्रत्येक महीने चिकित्सकों का एक सेवा भावी दल अपना सहयोग प्रदान करता है।

''योगः कर्मषु कौशलम्''अर्थात् कार्यों कुशलता का दूसरा नाम योग है। बालिकाएँ प्रत्येक क्षेत्र में कुशल बनें, स्वस्थ रहें, उनका तन–मन सुचारू रूप से विकसित हो इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर यहाँ नियमित रूप से योग, व्यायाम, पी.टी. शारीरिक शिक्षा व विभिन्न खेलों का आयोजन प्रतिदिन होता है।

संस्कृति व समाज को प्रतिबिंबित करती विद्यालयी गतिविधि–

विद्यालय समाज का लघु रूप होता है। इसे देखना है तो एक बार अवश्य ही कस्तूरबा गांधी विद्यालयों में जाकर देखें। यह वह स्थान है जहाँ भावी जीवन की समग्रता लिए नारी शक्ति की पौध तैयार की जाती है। यह नर्सरी समाज की जीवंत परम्परा, आदर्शों,मूल्यों और भारतीय संस्कृति को आत्मसात करती हुई आधुनिक जीवन की प्रगतिशीलता और वैज्ञानिक चिंतन को भी

अपने में समेटे हुए है। हम अतीत से सीख रहे हैं..... वर्तमान ज्ञान ज्योति का उपभोग कर रहे हैं और उसे भविष्य के सबल करों में समर्पित करने का प्रयास कर रहे हैं। 'सर्व धर्म समभाव' ही हम सबका आदर्श है। वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना विकसित करते हुए हम पौध को सर्वोपयोगी बनाने में जुटे हुए हैं।

लोकतांत्रिक परम्पराओं के परिपोषण में संलग्न विद्यालय परिवार–

कोई भी शिक्षालय देश–समाज की गतिविधियों और नीतियों का दर्पण है। अपने प्रारंभिक जीवन में ही कर्तव्यों और अधिकारों का बोध व्यक्ति को उत्तरदायी बनाने में सहयोग करता है। इन विद्यालयों में पूरा विद्यालय परिवार बालिकाओं में सामाजिक, राजनैतिक स्वस्थ मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास करता है। राष्ट्रीय पर्वों, विशिष्ट अवसरों, भाषणों, लघु नाटिकाओं, एकल व समूह गानों, गोष्ठियों, नुक्कड़ नाटकों आदि–आदि के माध्यम से छात्राएँ अभिव्यक्ति का उचित अवसर पातीं हैं।

जीवन कौशल प्रशिक्षण की व्यवस्था–

जीवन जीना एक कला है। निश्चित रूप से–''वो चलना भी क्या चलना है जिसका कोई उद्देश्य न हो, वो रचना भी क्या रचना है जिसमें कोई संदेश न हो'' विद्यालय बालिकाओं के भावी जीवन के निर्माण की वह कार्य शाला है जिसका अंग बनकर ही एक कुशल पात्र के रूप में अपने आपको प्रस्तुत किया जा सकता है। यहाँ सिलाई–कढ़ाई, पेन्टिंग, आर्ट एंड क्राफ्ट, रंगोली, मेहंदी, गायन–वादन आदि अनेक कार्य सिखाए जाते हैं।

कस्तूरबा विद्यालयों में हर एक इकाई अपने आप अनुशासित दिखाई देती है। हम विद्यालय सम्बन्धी हर कार्य को सुचारु रूप से चलाना ही अपना प्रेय और ध्येय समझते हैं।

अंत में हमारी बालिकाएँ विद्यालय की इस अर्जित धरोहर से अपने को जोड़कर समाज में अपनी उपयोगिता व सार्थकता सिद्ध करेंगी ऐसी हमारी आशा है।

हम चाहते हैं–

जीवन के पथ की दूर दुविधाएँ हों
जीवन यापन की सारी सुविधाएँ हों
उन्नति के शिखर पर जन–जन चढे
बेटियाँ बचें... पढ़ें और आगे बढ़ें

डॉ० प्रवीणा दीक्षित (हिन्दी,संस्कृत शिक्षिका)
के.जी.बी.वी. नगर क्षेत्र कासगंज

महिला अध्यापकों की चुनौतियां

"हैं प्रथम गुरू "माँ" करती वंदन, पा शिक्षा, सीख कृत्य कृत्य हुई ,
जीवन नैतिक मूल्यों को समझा सीखा, शिक्षा अब अध्यापिका बनकर दी"

हमें अपने महिला होने पर गर्व हैं, जीवन में कठिन श्रम से विभिन्न परीक्षाओं (प्राकृतिक, पारिवारिक, सामाजिक व विभागीय) की जटिलताओं से जूझकर उत्तीर्ण होने व हमेशा सशक्त बने रहने की अभिलाषा रहती हैं। ईश्वर कृपा से हम महिला होने के साथ साथ अध्यापिका भी हैं, जिसे 'सोने पे सुहागा' कहा जा सकता है। अनेकानेक मूल्यवान जीवन को सँवारने, निखारने का हरपल मौका सौभाग्य से ही किसी को प्राप्त होता है।

एक महिला अध्यापिका के हृदय मे ममत्व व वात्सल्य भाव का होना भी उनकी योग्यता के साथ–साथ व्यक्तित्व में अच्छे मानवीय गुणों का उनमें समावेश होना भी दर्शाता है।

हमारे प्रयासों में कोई कमी नहीं हो इसका भी ध्यान रखकर विद्यालय में शैक्षणिक कार्य, गतिविधियाँ सभी का सहयोग लेकर करते रहना चाहिए। छात्रों की भावनाओं को बारीकी से पढ़कर, समझकर उन्हें तदानुसार निखारने सँवारने की भरसक अनवरत कोशिश करते रहनी चाहिए। शिक्षण की विभिन्न विधाओं का सजीव चित्रण कक्षा में दिखाई देता हैं। सामान्यतः स्वच्छता, पर्यावरणीय ज्ञान, लिंगसंवेदीकरण, सामाजिक कुरीतियों का विरोध करने की क्षमता विकसित करना, अच्छे कार्यों में योगदान करते रहने की आदतों का समावेश होना, नैतिक मूल्यों को जीवन में अपनाकर उन्नति करने की प्रबल इच्छाशक्ति उत्पन्न करना, अभिमान से बचकर स्वाभिमान से भरा जीवन जीने की चाहत बनाये रखना, देश हित में कार्य करना व सहयोग करना, हृदय में अपनी मातृभूमि के प्रति अटूट श्रद्धा व प्रेम की भावना जीवंत रखकर कर्त्तव्यनिष्ठ होकर दैनिक कार्यों का संपादन करते रहना ही सही मायने में अच्छी शिक्षा सिद्ध हो सकती है।

विभिन्न विविधताओं की उपयोगिता से भरा अध्यापिका व छात्रों का रिश्ता धीरे–धीरे न जाने कब श्रद्धा व प्रगाढ़ प्रेम में परिवर्तित हो जाता है। ये अनुभूति शिक्षण को प्रभावी बनाने में अत्यंत ही महत्वपूर्ण सिद्ध होती है। अपने शिक्षण में छात्राओं का हित सर्वोपरि हो जाता है और ये सुधारात्मक प्रक्रिया ही छात्र अध्यापिका के मिश्रित प्रयासों का मिला–जुला प्रतिरुप हैं। जो समाज में भी आदर्श प्रस्तुत करता है। यह प्रक्रिया अनवरत चलती रहती है। अपने छात्रों को अध्ययन की मुख्य धारा से जोड़े रखना ही अच्छे शिक्षण की विशेषता होती है। विषम परिवेशीय परिस्थितियों में भी रुचिकर शिक्षण ही श्रेयस्कर होता है। छात्रों में कुशल नेतृत्व, क्रियाशीलता, दक्षता, क्षमता आदि गुणों का होना स्वाभाविक है, अध्यापिका द्वारा धरातल पर उन गुणों को क्रियान्वित करते रहना अति आवश्यक होता है। इसी तरह हम अपने उद्‌देश्य में कामयाब हो सकते हैं।

महिला अध्यापिका में ममत्व, स्नेह का भाव अति आवश्यक है, जो उसे अपने समकक्ष छात्रों को अपनी अभिव्यक्ति देने व जिज्ञासावश प्रश्न पूछने के लिए विवश कर ही देता है। अपने विद्यालय मे योगदान करने के अपने भाव को मैं अपनी एक रचना की कुछ पंक्तियों में व्यक्त करती हूँ–

"विद्यालय की गरिमा, हम मिलकर बढायेंगे।
हम नित नई कोशिश से, परिवर्तन लाएंगे ।।"
1– हर शिक्षक प्रतिभा का नित मूर्तिकार बने,
शिक्षा के मंदिर में नित ज्ञान की ज्योति जले,
नित ज्ञान की ज्योति जले,
शिक्षित करके इनके जीवन को सँवारेंगे,
हम नित नई कोशिश से परिवर्तन लाएँगे ।।

2– गाँवों में बसे हैं तो हम क्या नहीं कर सकते,
हम मेहनत के बल पर ही आगे बढ़ सकते हैं,
आगे बढ सकते हैं,
जड़ सींच सींच करके बगियाँ महकाऐंगे ,
हम नित नई तो कोशिश से परिवर्तन लाएँगे।।
विद्यालय की गरिमा.......................................

श्रीमती नैमिष शर्मा
स.अ.
पूर्व माध्यमिक विद्यालय– तेहरा
विकास खंड– मथुरा
जिला– मथुरा

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम-सामान्य ज्ञान प्रश्न

- जलियांवाला बाग हत्याकांड कब व कहाँ हुआ – 1919 ई., अमृतसर
- 'रोलेट एक्ट' कब पारित हुआ – 1919 ई.
- गाँधी–इरविन समझौता कब हुआ – 1931 ई.
- गाँधी–इरविन समझौता किससे संबंधित था – सविनय अवज्ञा आंदोलन
- स्वतंत्र भारत के प्रथम गवर्नर जनरल कौन थे – लॉर्ड माउंटबेटन
- काकोरी ट्रेन डकैती के नायक कौन थे – राम प्रसाद बिस्मिल
- 'स्वराज दल' की स्थापना किसने की – मोतीलाल नेहरू और वी. आर. दास
- साइमन कमीशन भारत यात्रा पर कब आया – 1928 ई.
- किस अधिनियम में भारत में पहली बार संघीय संरचना प्रस्तुत की गई– 1935 का अधिनियम
- जलियांवाला बाग में गोली चलाने का आदेश किसने दिया– जनरल ओ. डायर ने
- महात्मा गाँधी को सर्वप्रथम 'राष्ट्रपिता' किसने कहा था– सुभाष चंद्र बोस ने
- 15 अगस्त, 1947 ई. को भारत ने अपनी आजादी का पहला जश्न कहाँ मनाया था– कलकत्ता में
- भारत व पाकिस्तान के बीच विभाजन किस योजना के तहत हुआ– माउंटबेटन योजना
- स्वतंत्र भारत का प्रथम भारतीय गर्वनर जनरल कौन था – सी. राजगोपालाचारी
- गाँधी जी किस गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए लंदन गए थे – द्वितीय गोलमेज सम्मेलन
- असहयोग आंदोलन के शुरु होने के समय भारत का वायसराय कौन था– लॉर्ड चेम्सफोर्ड
- जनरल डायर की हत्या किसने की– ऊधम सिंह
- दांडी यात्रा में गाँधी जी ने कितनी दूरी तय करके नमक कानून का विरोध किया था– 385 किमी.
- जलियांवाला बाग कांड के समय भारत का वायसराय कौन था– लॉर्ड चेम्सफोर्ड
- 1919 ई. में पंजाब में हुए अत्याचारों के फलस्वरूप किसने ब्रिटिश सरकार से प्राप्त 'सर' की उपाधि लौटा दी थी– रवींद्रनाथ टैगोर ने
- स्वराज पार्टी की स्थापना कहाँ की गई– इलाहाबाद में
- 'इंडियन लिबरल फेडरेशन' की स्थापना किसने की– 1932 ई., महात्मा गांधी
- भारत छोड़ों आंदोलन के समय इंग्लैंड का प्रधानमंत्री कौन था– चर्चिल
- 1947 ई. के भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के दिल्ली अधिवेशन की अध्यक्षता किसने की– डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का 1938 ई. का अधिवेशन कहाँ हुआ– हरिपुरा
- करो या मरो का नारा किसने दिया था– महात्मा गाँधी
- भारत में साइमन कमीशन के बहिष्कार का क्या कारण था– इसके सभी सदस्य अंग्रेज थे
- किस आंदोलन में सरदार पटेल ने मुख्य भूमिका निभाई– बादोली सत्याग्रह
- भारत छोड़ो आंदोलन का प्रस्ताव आलेख किसने बनाया– महात्मा गाँधी

DIKSHA - National Teachers Platform for India

The DIKSHA platform offers teachers, students and parents engaging learning material relevant to the prescribed school curriculum. Teachers have access to aids like lesson plans, worksheets and activities, to create enjoyable classroom experiences. Students understand concepts, revise lessons and do practice exercises. Parents can follow classroom activities and clear doubts outside school hours.

App highlights

Explore interactive material created by teachers and the best Indian content creators for teachers and students in India. By India, for India!

Scan QR codes from textbooks and find additional learning material associated with the topic

Store and share content offline, even without Internet connectivity

Find lessons and worksheets relevant to what is taught in the school classroom

Experience the app in English, Hindi, Tamil, Telugu or Marathi, with additional Indian languages coming soon!

Supports multiple content formats like Video, PDF, HTML, ePub, mobi - and more formats coming soon!

Advantages for teachers

Find interactive and engaging teaching material to make your class interesting

See and share best practices with other teachers to explain difficult concepts to students

Join courses to further your professional development and earn badges and certificates on completion

View your teaching history across your career as a school teacher

Receive official announcements from the state department

Conduct digital assessments to check your students' understanding of a topic thaou have taught

Advantages for students and parents

Scan QR codes in your textbook for easy access to the associated lessons on the platform

Revise lessons that you learnt in class

Find additional material around topics that are difficult to understand

Practice solving problems and get immediate feedback on whether the answer is correct or not.

Want to create content for DIKSHA?

If you wish to be a part of this movement, contact us using the details.

This initiative is supported by the Ministry of Human Resources Development (MHRD) and led by the National Council for Teacher Education (NCTE) in India.

About DIKSHA

DIKSHA is a customizable National Digital Infrastructure for teacher-centric initiatives for use by States, Teacher Education Institutes (TEI) and private entities. Teachers can use DIKSHA to access and create high quality teaching, learning and assessment resources in all subjects and for all standards in English and many Indian languages. Teachers can use the platform for their entire career span - from when they are student teachers at TEIs until after they retire - to capture, authenticate and share their work, contributions and achievements. The DIKSHA platform strengthens the hands of 'Our Teachers Our Heroes'.

अगस्त माह के महत्वपूर्ण दिवस

- 8 अगस्त = विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस
- 12 अगस्त = अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस
- 15 अगस्त = स्वतंत्रता दिवस
- 19 अगस्त = फोटोग्राफी दिवस
- 20 अगस्त = सद्भावना दिवस
- 29 अगस्त = राष्ट्रीय खेल दिवस
- 30 अगस्त = लघु उद्योग दिवस

काशी कार्यशाला से मिली गुरुजनों को बेसिक शिक्षा में परिवर्तन की संगठित शक्ति की ऊर्जा

दिनांक 02.06.2018 एवं 03.06.2018 को काशी में मिशन शिक्षण संवाद की कार्यशाला आयोजित की गई।

जिसकी प्रमुख झलकियां निम्न हैं–

मण्डलायुक्त दीपक अग्रवाल ने मिशन शिक्षण संवाद काशी शैक्षिक उन्नयन कार्यशाला का प्रथम दिन शनिवार को उदघाटन दीप जलाकर और सरस्वती प्रतिमा पर माल्यार्पण कर वाराणसी पब्लिक स्कूल में किया। जिनका स्वागत कार्यक्रम संयोजक और सहयोगी सरिता राय जी, रविन्द्र कुमार सिंह, मनोज कुमार, पंकज जी, छवि जी, अब्दुल सर, ऋचा जी द्वारा किया गया।

इस कार्यशाला में प्रदेश भर से आए मिशन शिक्षण संवाद के सक्रिय सहयोगी शिक्षकों ने सरकारी स्कूलों में वर्तमान परिस्थितियों में किये जा रहे प्रेरक प्रयासों पर चर्चा और प्रस्तुतीकरण किया गया।

कार्यक्रम में मंडलायुक्त श्री दीपक अग्रवाल जी ने कहा कि शिक्षक का कार्य सबसे दुरूह एवं सम्मान और जिम्मेदारी का कार्य है। मिशन शिक्षण संवाद ने जिस तरह सरकारी स्कूलों की शिक्षा में सुधार हेतु एक सकारात्मक पहल की है वह प्रशंसनीय है। हर अच्छे कार्य की शुरुआत एक व्यक्ति ही करता है।

उन्होंने शिक्षकों का आह्वान किया कि शिक्षक अपनी हर अच्छी पहल और प्रयास को विभिन्न माध्यमों से दूसरे शिक्षकों तक जरूर पहुचाएं। कार्यक्रम में मंडलायुक्त ने एक नई परंपरा शुरू करते हुए प्रत्येक शुक्रवार को किसी एक विद्यालय में खुद विज्ञान शिक्षक के रूप में कक्षाएं लेने की घोषणा की।

कार्यक्रम में प्रभारी बीएसए श्री राम टहल ने मिशन शिक्षण संवाद की पहल का स्वागत करते हुए शिक्षकों के प्रयास की सराहना की। कार्यक्रम में मिशन शिक्षण संवाद के संयोजक विमल कुमार ने मिशन शिक्षण संवाद की आवश्यकता और उद्देश्य पर और डॉ० सर्वेष्ट मिश्र ने मिशन की शैक्षिक कार्यशालाओं और इंटरनेट की दुनिया में उसकी पहुँच और स्कूलों में उनके द्वारा किये जा रहे कार्यों के बारे में अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम में कमिश्नर श्री दीपक अग्रवाल ने मिशन शिक्षण संवाद कपिलवस्तु सेमिनार विशेषांक स्मारिका की सराहना की। कार्यकम में प्रोजेक्टर के माध्यम से प्रदेश के बेहतरीन स्कूलों का प्रस्तुतिकरण किया गया।

कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में भोजनोपरांत मिशन शिक्षण संवाद में सुझाव– सुधारों और कार्ययोजना पर विनोद कुमार जी द्वारा चर्चा कराई गई। जिसमें विभिन्न जनपदों से पधारे मिशन शिक्षण संवाद के संयोजकों और सहसंयोजकों ने अपने सुझाव और सुधारों पर विस्तृत चर्चा की। इस चर्चा में भाग लेते हुए सुरेश जायसवाल, डॉ० खुर्शीद हसन, अमरेश मिश्र, अखलाक सर, नवीन पोरवाल, अनन्त तिवारी, लोकेश बृजपाल, शिवेंद्र धाकरे, सुरेश सोनी ,दीपक पुंडीर, राम नारायण पाण्डेय आदि साथियों ने अपने विस्तृत विचार रखे तथा सभी उपस्थित साथियों ने अपनी सहमति–असहमति प्रकट कर चर्चा को लोकतांत्रिक रूप दिया। प्राप्त निष्कर्षों का संकलन मानिक चंद्र जी द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के द्वितीय दिवस में मिशन शिक्षण संवाद की काशी शैक्षिक उन्नयन कार्यशाला,

वाराणसी पब्लिक स्कूल में वाराणसी रीजन के अनमोल रत्न शिक्षकों द्वारा अपने बेहतरीन कार्यो का प्रस्तुतिकरण किया गया। कार्यशाला में मुख्य अतिथि जिला विद्यालय निरीक्षक ओपी राय ने कहा कि वर्तमान समय में परिषदीय स्कूलों में अधिकांश शिक्षक अच्छा कार्य करने की कोशिश कर कर रहे है।

उन्होंने शिक्षकों का आह्वान किया कि शिक्षक अपने स्कूलों और अपने बच्चों को एक ब्रांड के रूप में स्थापित करें इससे उनका सम्मान और अधिक बढेगा। उन्होंने मिशन शिक्षण संवाद के प्रयासों की सराहना की।

कार्यशाला में दूसरे दिन भी वाराणसी के साथ ही सात जनपदों से आए अनमोल रत्न परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा सरकारी स्कूलों में किए जा रहे प्रयासों का प्रस्तुतीकरण किया गया।

कार्यक्रम में खण्ड शिक्षा अधिकारी स्कन्द गुप्ता और बृजेश राय जी ने भी मिशन शिक्षण संवाद के प्रयासों की जमकर सराहना की, कहा कि मिशन शिक्षण संवाद ने जिस तरह सरकारी स्कूलों की शिक्षा में सुधार हेतु एक सकारात्मक पहल की है वह प्रशंसनीय है।

कार्यक्रम में प्रतिभागी शिक्षकों को प्रशस्ति पत्र और स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में मिशन के संयोजक विमल कुमार, सरिता राय, रविन्द्र कुमार सिंह, डॉ0 सर्वेष्ट मिश्र और मनोज कुमार सिंह, बृजेश राय, वाराणसी पब्लिक स्कूल के प्रबंधक अमित कुमार पांडेय, शिवम सिंह, विनोद कुमार, प्रांजल सक्सेना, अजीत सिंह, अशोक कुमार सिंह, कुंवर पंकज सिंह, ज्योति कुमारी, वीरेंद्र परनामी जी, डॉ0 खुर्शीद हसन अखलाक सर, विनोद मिश्र, आशीष शुक्ला, सहित प्रदेश के सभी जनपदों से आये शिक्षक मौजूद रहे।

मिशन शिक्षण संवाद

अगस्त 2018

अगस्त 2018

रवि.		5	12	19	26
सोम.		6	13	20	27
मंगल.		7	14	21	28
बुध.	1	8	15	22	29
गुरु.	2	9	16	23	30
शुक्र.	3	10	17	24	31
शनि.	4	11	18	25	

पर्व व त्यौहार

अगस्त

15 बुध. स्वतन्त्रता दिवस

22 बुध. ईद-उल-जुहा (बकरीद)

26 रवि. रक्षाबन्धन

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः— मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने—सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर—9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1-फेसबुक पेज: https://m.facebook.com/shikshansamvad/

2- फेसबुक समूह: https://www.facebook.com/groups/118010865464649/

3- मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉग : https://www.shikshansamvad.blogspot.in

4-Twitter(@shikshansamvad): https://twitter.com/shikshansamvad

5-यू-ट्यूब: https://www.youtube.com/channel/UCPbbM1f9CQuxLymELvGgPig

6— व्हाट्सएप नं0 : 9458278429

7— ई मेल : shikshansamvad@gmail.com

8— वेबसाइट : www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात